काव्य मंजरी
Kavya Manjari

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
Kendriya Vidyalaya Sangathan

काव्य मंजरी

भाग-17

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

काव्य मंजरी, भाग-17

स्थापना दिवस-2023 के उपलक्ष्य में प्रकाशित केन्द्रीय विद्यालय संगठन के शिक्षकों एवं कार्मिकों द्वारा रचित कविताओं का संकलन

संरक्षक : निधि पाण्डे, आयुक्त के.वि.सं.

संपादक : अजीता लोंग्जम, संयुक्त आयुक्त (प्रशा. 1), के.वि.सं.

संपादकीय प्रभारी : सचिन राठौर, सहायक संपादक, के.वि.सं. (मु)

आवरण पृष्ठ : प्रकाशन अनुभाग, के.वि.सं. (मु)

अजीता लोंग्जम, संयुक्त आयुक्त (प्रशा. 1), केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मुख्यालय नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

दो शब्द

केन्द्रीय विद्यालय संगठन की स्थापना के 60 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर 'काव्य मंजरी' पुस्तक का 17वां अंक पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस हीरक जयंती पर हमारे शिक्षकों और अन्य कार्मिकों की कलम ने केन्द्रीय विद्यालय संगठन की गौरव गाथा का वर्णन किया है।

जिस संस्थान के साथ हम कार्य करते हैं, उसके साथ हमारा एक अनकहा गहरा रिश्ता जुड़ जाता है। हमारे जीवन और जीवन शैली में उस संस्थान का बहुत बड़ा योगदान होता है, जिसके साथ हम कार्य करते हैं। एक संस्थान के रूप में केन्द्रीय विद्यालय संगठन पिछले 60 वर्ष में अपने लाखों कार्मिकों के साथ एक अटूट रिश्ता बना चुका है। वर्तमान में भी संगठन 14 लाख से अधिक विद्यार्थियों और 50 हजार से अधिक कार्मिकों के जीवन को स्पर्श करता हुआ अपने कर्तव्य पथ पर निरंतर अग्रसर है। इस पुस्तक में संकलित कविताएं केन्द्रीय विद्यालय संगठन और उसके शिक्षकों व कार्मिकों के बीच स्थापित खूबसूरत रिश्ते का गीत गाती नज़र आती हैं।

इस हीरक जयंती विशेषांक के लिए देश भर के केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों और कार्मिकों ने अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं। चयन समिति द्वारा अंतिम रूप से जिन कविताओं का चयन किया गया, उन सभी को हार्दिक बधाई। ये कविताएं केन्द्रीय विद्यालय संगठन की गौरव गाथा को जन-जन तक ले जाने की वाहक बनेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

आज जब विश्व पटल पर भारत का स्वर्णिम गौरव अपनी कीर्ति बिखेर रहा है, तब देश की भावी पीढ़ी की एक मजबूत आधारशिला रखने की दिशा में केन्द्रीय विद्यालय संगठन अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। लद्दाख से लेकर रामेश्वरम तक और तवांग से लेकर कवरत्ती तक देश के हर कोने में शिक्षा की अलख जगाने के लिए संगठन कटिबद्ध है। इस हीरक जयंती वर्ष में पंच प्राण को साथ लेकर देश को नई दिशा देने के संकल्प को केन्द्रीय विद्यालय संगठन एक बार पुनः दोहराता है।

एक बार फिर पुस्तक के सभी रचनाकारों की प्रशस्ति करते हुए, पुस्तक के संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

स्नेहिल शुभकामनाओं सहित,

निधि पाण्डे
आयुक्त

अनुक्रम

क्र.सं./S.No.	विषय/Title	पृ./Pg.
1	मेरा गर्व है, सम्मान है!	1
2	साठ बरस	2
3	स्वर्णिम पिछले साठ साल में!	3
4	सँवारे नौनिहालों की तकदीर संगठन	4
5	साठ बसंत के साठ रंग	5
6	डायरी के बहाने !	6
7	हाँ मैं केन्द्रीय विद्यालय हूँ !	7
8	जन-मन की शान, भारत का मान	8
9	विद्यांचल ऐसा मिले मुझे	9
10	नए क्षितिज की नई उड़ान	10
11	मेरा के. वि. मेरा अभिमान	11
12	शिक्षा का दीप केन्द्रीय विद्यालय	12
13	मेरा गौरव केन्द्रीय विद्यालय	13
14	हर कदम यहां शिक्षा की उड़ान	14
15	अनेकता में एकता की मिसाल है के.वि	15
16	मेरा मान मेरा सम्मान	16
17	मेरा विद्यालय	17
18	मेरा देश	18
19	केन्द्रीय विद्यालय के मानस पुरुष	19
20	मेरी हिंदी	20

क्र.सं./S.No.	विषय/Title	पृ./Pg.
21	मेरा अमृत मेरा देश	21
22	केन्द्रीय विद्यालय हमारा	22
23	केन्द्रीय विद्यालय की परिकल्पना	23
24	के. वि. ही मेरी पहचान	24
25	मैं लघु भारत हूँ, मैं के.वि. हूँ	25
26	के.वी.एस.-एक सूर्य	26
27	के.वि. संगठन की नहीं कोई मिसाल	27
28	शिक्षा का ध्रुवतारा	28
29	60 साल का सुंदर लेखा	29
30	मेरा प्यारा केन्द्रीय विद्यालय	30
31	ज्ञान का प्रकाश	32
32	साठ वर्ष के कालखंड में	33
33	ज्ञान दान के छह दशक	34
34	ज्ञान का उद्गमस्थल	35
35	नन्हा हिंदुस्तान	36
36	हम शिक्षा के प्रहरी	37
37	केवि गीत सुनाता हूँ	38
38	राष्ट्र की शान केवियन	39
39	मेरा केन्द्रीय विद्यालय ही मेरा अभिमान है	40
40	मेरा के.वि. मेरा अभिमान	41
41	केन्द्रीय विद्यालय का ऊंचा परचम	42
42	केन्द्रीय विद्यालय-ज्ञान का मंदिर	43
43	भारत का गौरव: केन्द्रीय विद्यालय	45
44	कहानी केन्द्रीय विद्यालय की	46
45	हमारा FLN मिशन	47

क्र.सं./S.No.	विषय/Title	पृ./Pg.
46	अपना के. वि. अपनी शान	48
47	शिक्षा नभ का नक्षत्र	49
48	कह रही हूँ गाथा आज मैं	50
49	हृदय हर्ष गर्व से कहता	51
50	पंच-प्राण गीत	52
51	Celebrating the Institution of KV	53
52	We The Teachers of KVS	55
53	The Difference I've Made	56
54	Sparkling Legacy:Six Decades' Radiance	57
55	My KV-A steping Stone & A Destination	58
56	A Dynamic Journey in KVS	60
57	KVS and I: Six Decades of Educational Evolution	62
58	More than just a Profession	64
59	Here's to KVS, our Alma mater	65
60	KVS- As Tagore would See it	66
61	Ode To My KV	67
62	Nature	68
63	My Faces in KVS	69
64	The Sprouting KVS	70
65	A 'Shining Star' we Bow to thee	71
66	The Edifice of Fame	73
67	My KV-My Pride	74
68	A Sanctuary of Knowledge	75
69	Shaping Futures: A Journey	76
70	KV-A School Unparalleled	77
71	The Three Jubilees	78

1

मेरा गर्व है, सम्मान है!

मेरा गर्व है, सम्मान है,
मेरे देश का अभिमान है।
केन्द्रीय विद्यालय...
हिंदुस्तान है, हिंदुस्तान है।

जब दुनिया में आंखें खोली,
बस तेरे ही सपने देखे।
यहां नहीं पराया कोई मिला,
सब मुस्काते अपने देखे।
यहां शिक्षा ही हर मज़हब है,
हर धर्म यहां पर ज्ञान है।
केन्द्रीय विद्यालय...
हिंदुस्तान है, हिंदुस्तान है।

ऊंच-नीच को छोड़ यहां पर,
हक है सब को पढ़ने का।
खेलकूद और शिक्षा में भी,
हरदम आगे बढ़ने का।
जीवन में प्रगति के पथ पर,
चलना भी आसान है।
केन्द्रीय विद्यालय...
हिंदुस्तान है, हिंदुस्तान है।

इसके प्रतिभाशाली शिक्षक,
बच्चों को सिखलाते हैं।
कितनी ही प्रतिभाओं से फिर,
विद्यार्थी भी भर जाते हैं।
एक राष्ट्र और एक ही शिक्षा,
इसकी सदा पहचान है।
केन्द्रीय विद्यालय...
हिंदुस्तान है, हिंदुस्तान है।

मेरा गर्व है, सम्मान है।
मेरे देश का अभिमान है।
केन्द्रीय विद्यालय...
हिंदुस्तान है, हिंदुस्तान है।

कहकशाँ
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (कला)
केन्द्रीय विद्यालय आईटीबीपी देहरादून

2

साठ बरस

साठ वर्ष का हो जाने पर,
हो गया परिपक्व और मैं
साठ वर्ष के अनुभव सारे,
रचे-बसे मेरे कण-कण में
सन् तिरसठ में उदित हुआ मैं,
सेना के वीर जवानों को
बालक पढ़ते रहे निरंतर,
सैनिक रहें ठिकानों पर
एक है भारत, श्रेष्ठ है भारत,
एक समान हो पाठ्यक्रम,
शिक्षक सीखें, बच्चे सीखें,
चले निरंतर ही यह क्रम।

विज्ञान कांग्रेस, युवा संसद
हरित विद्यालय, स्वच्छ विद्यालय
लोक गीत-नृत्य के रंग
ज्ञान से पूरित अनेक पुस्तकालय।

केवल ज्ञान किताबी न हो,
बच्चे सीखें कौशल विकास,
करके सीखें, न रटें-रटायें
अटल टिंकरिंग का हो दिव्य प्रकाश।

एन.ई.पी. 2020 के साथ
बढ़ रहा हूँ मैं वर्तमान में,
कलाम, सुभाष, विवेकानंद की
झलक मिले, हर युवान में।

केन्द्रीय विद्यालय नाम मेरा
केन्द्र हूँ मैं भारत का,
ज्ञान दीपशिखा जलती रहे,
हो विकास हर बालक का।

दीपशिखा गढ़वाल
प्र.स्ना. शिक्षिका (अंग्रेजी)
केन्द्रीय विद्यालय सीएमएम जबलपुर

3

स्वर्णिम पिछले साठ साल में

स्वर्णिम पिछले, साठ साल में,
मुस्कानों को सींचा,
केन्द्रीय विद्यालय, एक धरोहर,
क्षितिज को, मन तक खींचा,
विद्या का, मंदिर है अनुपम,
संस्कारों का मेला,
केन्द्रीय विद्यालय ने, सपनों को,
कोरी आंखों में भींचा,
स्वर्णिम पिछले, साठ साल में,
मुस्कानों को सींचा!

लघु भारत की, प्रतिलिपि हैं,
केन्द्रीय विद्यालय उत्सव,
पूर्व से पश्चिम, एक लय है,
सदा रखती जीवंत,
प्राचीन गौरव से, अधुनातन,
मेल की, प्रगति थामे,
माथे की, आभा में भरता,
निर्दोष अनोखा कलरव,
हर दृष्टि, सम्मान है पाई,
ना ऊंचा, कोई नीचा,
स्वर्णिम पिछले साठ साल में,
मुस्कानों को सींचा!

तवांग से लेकर, भुज तक फैली,
एक आभा एक ज्योति,
केन्द्रीय विद्यालय, ने है थामी,
उत्कंठा स्वयं अनोखी,
देश प्रेम के, अखंड भाव ने,
रंग रक्खा है जीवन,
हर ऋतु यहां पर जैसे,
नई एक,कविता होती,
एक शिखर है, एक क्षितिज है,
है सुंदर, एक बगीचा,
स्वर्णिम पिछले,साठ साल में,
मुस्कानों को सींचा!

अवनि प्रकाश श्रीवास्तव
स्नातकोत्तर शिक्षिका (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय वाहन निर्माणी जबलपुर

4

सँवारे नौनिहालों की तकदीर संगठन

भारत की एक छोटी सी तस्वीर संगठन।
सँवारे नौनिहालों की तकदीर संगठन।

हरसू हैं कोशिशें यही शिक्षा का राज हो।
अज्ञान का तिमिर छंटे, जगमग समाज हो।
सारे जगत को दे सके पैगाम अमन का -
भारत के भाल जगत गुरु का वो ताज हो।
करता है रात दिन यही तदवीर संगठन।
सँवारे नौनिहालों की तकदीर संगठन।

भाषाएं भिन्न-भिन्न हैं, हैं भिन्न खान-पान।
पहनावा भिन्न-भिन्न है, हैं भिन्न गीत गान।
हिंदू हैं, मुसलमान हैं, सिख, जैन इसाई-
भारत दिलों में सबके है, सबकी यही पहचान।
हर द्वेष की गिरा रहा प्राचीर संगठन।
सँवारे नौनिहालों की तकदीर संगठन।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति बीस के प्रभाव से।
स्वतंत्रता मिली विषय चयन दबाव से।
शिक्षा का समावेशी रूप आया है नया -
सब साथ पढ़ सकेंगे बिना भेद भाव के।
करता है नए राष्ट्र की तामीर संगठन।
सँवारे नौनिहालों की तकदीर संगठन।

के वि के हैं सदस्य, ये पहचान बहुत है।
परिवार है हमारा, इसका मान बहुत है।
ले जाएं गगन पर इसे शिक्षा के क्षेत्र में –
चमके ये चन्द्र, सूर्य सा, अरमान बहुत है।
दिल चाहे नित लिखे नई तहरीर संगठन।
सँवारे नौनिहालों की तकदीर संगठन।

योगेन्द्र गोस्वामी
टीजीटी (कार्यानुभव)
केन्द्रीय विद्यालय पीलीभीत

5

साठ बसंत के साठ रंग

साठ बसंत के साठ रंग
साठ कलाओं से पूर्ण
हर बसंत का अपना राग
हर अनुभूति अक्षुण्ण

सर्वोकृष्ट शिक्षा का ध्येय लिए
उन्नीस सौ तिरेसठ का सन
कुल बीस विद्यालयों संग बना
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

मजबूत इरादों के उत्तम शिक्षको ने
हर कसौटी पर, छात्रो को दिया तान
चहुँमुखी विकास में सतत् योगदान
बना केन्द्रीय विद्यालयों की पहचान

पढते बढते यह वट वृक्ष, पहुंचा
रूस, नेपाल, अफगानिस्तान
लक्ष्य यही था, बस, छात्रों में
उत्कृष्ट नागरिकों का निर्माण

राष्ट्र निर्माण के योगदान में
शिक्षा की ज्योत लहराती रही
नित नए आयाम छुए संगठन
इसकी, यश पताका फहराती रहे।

अकांक्षा सैम्युल्स
प्रचार्या
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 जीसीएफ जबलपुर

6

डायरी के बहाने!

ऐ डायरी! आज फिर कुछ बतियाना चाहता हूँ।
केन्द्रीय विद्यालय के साठ वर्षों को गाना चाहता हूँ,
“तत् त्वं पूषण अपावृणु” के भाव बिखराना चाहता हूँ,
‘दया कर दान विद्या का’ घोष फैलाना चाहता हूँ,
ऐ डायरी! आज फिर कुछ बतियाना चाहता हूँ।

बीस से बारह सौ पचास के सफर पर इतराना चाहता हूँ,
साठ वर्षों में विदेशों तक के सफर पर इठलाना चाहता हूँ,
“एक भारत श्रेष्ट भारत” के आदर्श को गुनगुनाना चाहता हूँ,
ऐ डायरी! आज फिर कुछ बतियाना चाहता हूँ।

केन्द्रीय विद्यालय के स्वर्णिम अतीत को बाँचना चाहता हूँ,
आजादी के अमृत महोत्सव काल में नाचना चाहता हूँ,
नालंदा, तक्षशिला के गौरव की तान महकाना चाहता हूँ,
ऐ डायरी! आज फिर कुछ बतियाना चाहता हूँ।

छात्रों के लाल,पीले,हरे,पोशाक में मुस्काना चाहता हूँ,
छात्रों के सर्वांगीण विकास को नित्य दुहराना चाहता हूँ,
“योग: कर्मसु कौशलम” के ओज को दिखलाना चाहता हूँ,
ऐ डायरी! आज फिर कुछ बतियाना चाहता हूँ।

अशोक कुमार पाठक
उप–प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय अपर कैम्प, देहरादून

7

हाँ मैं केन्द्रीय विद्यालय हूँ !

जमीन से आसमान तक का सफ़र करता हूँ
मैं बच्चों में जीवन का हर रंग भरता हूँ,
ज्ञान व विज्ञान की किरण हूँ मैं,
भारतीय शिक्षा जगत का अद्वितीय संस्करण हूँ मैं,
हाँ कोई और नहीं केन्द्रीय विद्यालय हूँ मैं -2

न हिन्दू न मुस्लमान न सिख न इसाई हूँ मैं,
पूरा विश्व हमारा घर है, आपका धर्मनिरपेक्ष भाई हूँ मैं,
द्विभाषीय लिवासों में सुसज्जित एक साज हूँ मैं,
गाँवों और शहरों की पहली पसंद, भारत की ताज हूँ मैं,
हाँ कोई और नहीं केन्द्रीय विद्यालय हूँ मैं -2

प्राचीनता व आधुनिकता का अनुपम और अनूठा संगम हूँ मैं,
सांस्कृतिक धरोहरों का रक्षक , भ्रष्टाचार व दुराचार का भक्षक हूँ मैं
गांधी की सोंच ,विवेकानंद की कल्पना व अम्बेडकर की लेखनी हूँ मैं
बुद्ध , महावीर व चाणक्य की साधना हूँ मैं,
हाँ कोई और नहीं केन्द्रीय विद्यालय हूँ मैं -2

प्रेमचंद, निराला ,जयशंकर प्रसाद का छंद,
कबीर की दोहा, सुभद्रा कुमारी चौहान की हुंकार व नाद हूँ मैं,
गंगा जैसा पवित्र, हिमालय जैसा दृढ निश्चयी,

प्रशांत महासागर जैसा विशाल व शेर जैस वीर हूँ मैं,
हाँ कोई और नहीं केन्द्रीय विद्यालय हूँ मैं-2

स्वछता सरलता व सहनशीलता का पर्याय हूँ मैं,
कोहिनूर जैसा चमकीला व वारिश की बूंदों जैसा स्वच्छ हूँ मैं,
गरीबों पिछड़ों व कमजोर वर्गों की पहली पसंद,
सर्वशिक्षा व सहशिक्षा का मुलकंद हूँ मैं,
हाँ कोई और नहीं केन्द्रीय विद्यालय हूँ मैं -2

शिक्षा जगत का प्रहरी ,भारत की मूल इकाई हूँ मैं,
लता की स्वर व बिस्मिल्ला की शहनाई हूँ मैं,
हाँ कोई और नहीं केन्द्रीय विद्यालय हूँ मैं -2

राजेंद्र प्रसाद
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
(सामाजिक विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 कांचरापारा

8

जन-मन की शान, भारत का मान

जन-जन की शान है,
भारत का मान है,
मेरा केन्द्रीय विद्यालय मेरा अभिमान है!
एक पाठ्यक्रम एक ही भाषा से सबको समझाया।
तक्षशिला से नालंदा तक का इतिहास पढ़ाया।
काठमांडू और मास्को चाहे हो तेहरान।
सबके अंदर दिखता अपना प्यारा हिन्दुस्तान।
जग में सम्मान है,
अपनी पहचान है,
मेरा केन्द्रीय विद्यालय मेरा अभिमान है।

आई.आई.टी., आई.आई.एम. सबमें अपने बच्चे।
जिनकी मेधा का लोहा भी मानते अच्छे-अच्छे।
इसरो से लेकर नासा तक हमने नाम कमाया।
भारत के स्वर्णिम गौरव का भी परचम फहराया।
पंछी की उड़ान है,
मन आसमान है,
मेरा केन्द्रीय विद्यालय मेरा अभिमान है।

'असतो मा सद्गमय' से होता प्रति दिन जहां प्रभात।
'तमसो मा ज्योतिर्गमय' से होती है शुरुआत।
छात्र-प्रतिज्ञा और प्रार्थना मानवता सिखलाती।
बनो राष्ट्र के श्रेष्ठ नागरिक का अभ्यास कराती।
इस पर कुरबान है,
तन मन और जान है,
मेरा केन्द्रीय विद्यालय मेरा अभिमान है।

मनोज कुमार गुप्ता
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (अंग्रेज़ी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र.2 वायुसेना स्थल कानपुर

9

विद्यांचल ऐसा मिले मुझे

माँताचल से जब निकलूँ बाहर,
नन्हे हाथो में थामे बस्ते।
सपने आखों में सजा लिए,
विद्यांचल ऐसा मिले मुझे।
माँताचल से जब...

विविध संस्कृति जहाँ साथ मिले,
और हर भाषा में शिक्षण हो।
जहाँ खेल-खेल में अध्ययन हो,
और विविध विषयों का संगम हो
जहाँ निपुण भारत और एफ एलएन से
सीखने की जरूरत पूरी हो
विद्यांचल ऐसा मिले मुझे।
माँताचल से जब...

जहाँ बाल वाटिका प्यारी हो,
और सी सी ए की फुलवारी हो।
जहाँ बगिया ज्यमितीय का रूप दिखे,
और इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी भी मूर्तदिखे
जहाँ ओ लैब और अटलट्विंकलिंग की
वेधशाला निराली हो
विद्यांचल ऐसा मिले मुझे।
माँताचल से जब...

जहाँ एन ई पी २० की नीति मिले,
और राष्ट्र प्रेम की सीख मिले।
जहाँ एस बी एस बी ,
और कला उत्सव कीउत्साह भरी तयारी हो।
जहाँ एस डी ज़ी,गोल और 21वीं सदी,
स्किल पाने का जोश भारी हो,
विद्यांचल ऐसा मिले मुझे।
माँताचल से जब...

हे तात मेरी ये बात सुनो,
केन्द्रीय विद्यालय में मुझको,
उत्तम शिक्षण की झलक दिखी।
गर मौका मै पा जाऊं जो,
के वी में अध्ययन कर पाऊं जो
मंगल की धरती नापूंगा,
सूरज पर ध्वज फ़हराउंगा।

ओलंपिक के सारे मैडल मै,
भारत माँ के चरणों में चढ़ाऊँगा।
तत्त त्वं पूषन अपवाणु
का ध्येय वाक्य दोहराऊँगा।
स्वर्णिम गौरवमय विश्व गुरु,
भारत की शान बढाऊँगा।

डॉ. सुनीता गुप्ता
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 जबलपुर

10

नए क्षितिज की नई उड़ान

राष्ट्रवाद का संकल्प लिए
निज नए क्षितिज की
और भरता उड़ान
शिक्षा और मानवता का संदेश देता
तत् त्वं पूषन् अपावृणु
की उम्मीदों पर अग्रसर हो
स्वाभिमान के लिए उद्घोष करता
मंजिलो पर बढ़ता खिलखिलाता
आज हर घर है ये कहता
मेरा केवि है महान
मेरा केवि मेरी शान

असत्य से सत्य की ओर चलने वाला
भारतीय संस्कृति सभ्यता का मान रखने वाला
साठ सालों की अनोखी यादों को पहचान दिलाता
के वि प्रगाढ़ मंज़िलों पर बढ़ता
कभी न थकता कभी न रुकता
हौसलों को पंख लगा उड़ता
मेरा अस्तित्व मेरी पहचान
मेरा केवि मेरी शान

प्रभामंडल को अलौकिक कर
नूतन शिक्षा प्रणाली को समावेशी बनाने को
नन्हे होंठों पर मुस्कान लाने को
नया इतिहास बनाने को
बाल वाटिका का आगाज हो चुका
आओ स्वर्णिम दीप जलाएँ
दुनिया को नया पाठ सिखाएं
मेरा केवि है महान

नई शिक्षा नीति के प्रारूप को
नूतन निति को सफल बनाए
विश्व में परचम फैलाएं
समृद्ध इतिहास बनाएँ
राष्ट्र को मजबूत बनाएं
लक्ष्यभेदी दर्शन दे जाए
मेरा अस्तित्व मेरी पहचान
मेरा केवि मेरी शान

पायल गुप्ता
प्राथमिक अध्यापिका
केन्द्रीय विद्यालय मॉस्को

11

मेरा के. वि. मेरा अभिमान

वीरों की धरती पर खिलता केन्द्रीय विद्यालय,
साठ वर्षों से बढ़ता नए उजाले की ओर,
ज्ञान का प्रकाश यहां छूता संकल्प की ऊंचाइयों का आसमान,
अद्यतन शिक्षा का नेतृत्व यहां की पहचान,
मेरा केवि मेरा अभिमान,
ज्ञान की धारा सदा प्रवाहमान।

शिक्षा का आदर्श स्थल, उच्च मानकों की शिक्षा का केन्द्र,
समृद्धि के पथ पर अग्रसर, नए उद्देश्यों की ओर,
उद्यमिता और साहस बढ़ाता, देता सभी विषयों का ज्ञान,
ख्याति इसकी देश–विदेश में, नहीं आवश्यक कोई प्रमाण,
मेरा केवि मेरा अभिमान,
ज्ञान की धारा सदा प्रवाहमान।

संस्कृति की भूमि, बच्चों का उत्कृष्ट संसार,
यहां पढ़े ज्ञानी बनते नेता और संगीतकार,
हर विद्यार्थी का होता मार्गदर्शन, मिलती सपनों को उड़ान,
मेरा केन्द्रीय विद्यालय, मेरा प्रिय स्थान,
मेरा के. वि. मेरा अभिमान,
ज्ञान की धारा सदा प्रवाहमान।

पुष्पेन्द्र कुमार
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय के. रि. पु. ब. बिजनौर

12

शिक्षा का दीप केन्द्रीय विद्यालय

मेरा केवि-मेरा अभिमान, हर पल ऊँचा रहे नाम
बढ़ता केवि संगठन नए भारत का नया अभिमान
शिक्षा की ज्योति जलाकर, करेगा जन कल्याण
आओ मिलकर करें, नव भारत का नव निर्माण।

नई शिक्षा नीति से नया बदलाव लाएगा यह
दुनिया के सामने अपनी पहचान बनाएगा यह
कला उत्सव से दुनिया में अपनी संस्कृति दिखाएगा यह
धरती से आसमान तक अपनी धाक जमायेगा यह।

खेलों में स्वर्णिम छलाँग लगाकर, दुनिया को यह बताएगा
धूल चटाकर भेजेंगे मैदानों से, जो नए भारत से टकराएगा
विज्ञान की नई खोज से, अंतरिक्ष में अपनी धाक जमायेगा
नए आयाम प्राप्त करने के लिए, दुनिया को नई राह दिखाएगा।

ऐसे शिक्षा के मंदिर को, हम करते हैं नित वंदन
शिक्षा की ज्योति जलाने के लिए तैयार हैं हम हरदम
सरकार ने जनता की भावनाओं का किया पूरा मंथन
तब 1253 विद्यालयों का हुआ, केन्द्रीय विद्यालय संगठन।

सोहन लाल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय डिफू, कार्बी अंग्लोंग

13

मेरा गौरव केन्द्रीय विद्यालय

मैं आज कुछ खास लिख रही हूँ,
केन्द्रीय विद्यालय का स्वर्णिम इतिहास लिख रही हूँ।

60 वर्षों से जो सफलता के नए आयाम छू रहा है,
निरंतर बढ़ रहा है अपने पथ पर ऊँचाईयां को अविराम छू रहा है।

जहां हम बच्चों को पढ़ाई और संस्कारों से सींचते हैं,
यहाँ बच्चे ही नहीं शिक्षक भी हर दिन कुछ नया सीखते हैं।

विद्यार्थी जो संस्कृति, कला और तकनीकी के क्षेत्र में अपनी पहचान बना रहे हैं,
वो देश में ही नहीं विदेशों में भी के.वि. का परचम लहरा रहे हैं।

चन्द्र यान 3 जो चांद को छू रहा है, उसमे भी के.वि. के नौनिहालों का योगदान है,
के.वि. सिर्फ मेरी जीविका नहीं मेरा संपूर्ण परिचय मेरी पहचान है।

मैं गौरवान्वित हूँ कि मैं के.वि. की एक मजबूत कड़ी हूँ,
मेरे विद्यार्थियों की सफ़लता मे मैं भी एक सीढ़ी हूँ।

मैं के.वि.एस. को नमन करती हूँ कि वो राष्ट्र निर्माण में तत्पर है,
बिना रुके, बिना थमे कर्तव्य पथ पर अग्रसर है।

देश की प्रगति में के.वि.सं. का सफल प्रयास लिख रही हूँ।
हाँ, मैं आज कुछ खास लिख रही हूँ,
केन्द्रीय विद्यालय का स्वर्णिम इतिहास लिख रही हूँ।

रुचि गुप्ता
स्नातकोत्तर शिक्षिका (रसायन शास्त्र)
केन्द्रीय विद्यालय वायु सेना स्थल बरेली

14

हर कदम यहां शिक्षा की उड़ान

केन्द्रीय विद्यालय मेरा अभिमान
विद्या का यहां होता दान
जन-जन करता इसका गुणगान
देश का गौरव हमारी शान
मेरा के.वि. मेरा अभिमान।

शिक्षा का दीप जलता प्रतिपल
ज्ञान का अमृत बहता कल कल
यत्नशील शिक्षक प्रयत्नशील छात्र
सब मिलकर बढ़ाएं इसका सम्मान
मेरा के.वि. मेरा अभिमान।

हर कदम यहां शिक्षा की उड़ान
नवाचारी विधियों का नव आयाम
ज्ञान का संचार सर्वांगीण विकास
शिक्षा खेलकूद कला और विज्ञान
मेरा के.वि. मेरा अभिमान।

नव शिक्षा नीति का समावेश
एफ. एल. एन. का हुआ प्रवेश
निपुण बनेंगे आगे बढ़ेंगे
हर क्षेत्र में नई पहचान
मेरा के.वि. मेरा अभिमान।

केन्द्रीय विद्यालय की उच्च प्रतिष्ठा
संयम परिश्रम नैतिकता निष्ठा
नवीन तकनीकियों का नवनिर्माण
उच्चतम शिक्षा सर्वोत्तम परिणाम
मेरा के.वि. मेरा अभिमान।

निरंतर उन्नति की राह पर अग्रसर
संसिद्धि की उच्च शिखर को प्राप्त कर
निर्मित करता आदर्श इंसान
बनेगा अपना देश महान
केन्द्रीय विद्यालय मेरा अभिमान।

पूनम कपिल
प्राथमिक शिक्षिका
केन्द्रीय विद्यालय बूंदी

15

अनेकता में एकता की मिसाल है के.वि

अनेकता मे एकता का मिसाल है मेरा के.वि.
भारत का स्वर्णिम गौरव है मेरा के.वि.
तक्षशिला नालंदा को लौटाने मे सक्षम है मेरा के.वि.
असतोमा सद्गमया का मूल मंत्र देती है मेरा के.वि.
ओम सहनाभवतु पर बल देते हैं मेरा के.वि.
राजभाषा हिंदी को बढावा देती है मेरा के.वि.
एक भारत श्रेष्ठ भारत का मिसाल है मेरा के.वि.
खेलकूदों को अंजाम देते हैं मेरा के.वि.
पाठ्येतर गतिविधियों मे अग्रणी है मेरा के.वि.
मेरा के वि सरताज है इस दुनिया मे
अंग्रेजी, हिंदी, प्रांतीय भाषाओं को बढावा देती है मेरा के.वि.
सब कुछ समाया है मेरा के.वि. मे,
सत्यम, शिव, सुंदरम का संगम है मेरा के.वि.
मेरा अभिमान, पहचान है के.वि.
मेरा अभिमान पहचान है के.वि.

डॉ. शैलजा टी एच
पी जी टी (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय केलट्रोन नगर

16

मेरा मान मेरा सम्मान

मेरा केन्द्रीय विद्यालय मेरा मान है, सम्मान है
स्वर्णिम है भविष्य इसका, इस पर मुझे अभिमान है
जाति-धर्म से बढ़कर मानवता का पढ़ते हम पाठ है
कर्तव्य पथ पर चलकर करते, हर लक्ष्य संधान है
मिलकर पढ़ते हम सब बच्चे, सीखते बातें सच्ची है
एक है गणवेश हमारी, एक हमारी पहचान है
केवल किताबी ज्ञान नहीं, जीना भी सिखलाता हैं
कर्मवीर बनाता हमको, दृढ़ता में हम चट्टान है
परचम हर जगह सफलता का, हमने ही लहराया है
बनाये है इतिहास कई, रचाये कई कीर्तिमान है
बनकर सूरज चमकते है, फैलाते है उजियारा
उन्नति के, प्रगति के लेकर आए नए विहान है
दुर्गम स्थानों पर भी, शिक्षा की अलख जगाता है
सबसे अलग सोच इसकी, बनाती इसे महान है
बच्चों के हित से जुडी होती है हर योजना
संस्कारों को करता है पुष्ट, ये ऐसा संस्थान है।

अनिल कुमार यादव
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 4, जयपुर

17

मेरा विद्यालय

मेरा विद्यालय वही जो परम मंगलमय हो
अद्वितीय अलौकिक कीर्ति निलय हो
सौम्य-सुवदन-सुविकसित जिससे सब हों
जिसकी शुचिता प्रीति-बेलि प्रति उर में हो
अतुलित बल जिससे बने जाति अति बलवती
बहु लोकोत्तर फल लाभ हो भारत भूमि फलवती।

है भवहित मूल भूत इस विद्यालय का
पूजनीय-वंदनीय शिक्षा के देवालय का
इसमें होती है जाति संगठन की शुभ पूजा
होता सहयोग मंत्र स्वर इस में गूँजा
कटुता-संकीर्णता-कलह-कुटिलता-कुरुचि अबल
कर दूरित इसमें बहती अमृत धारा प्रबल।

शुभ आशाएँ वहाँ समर्थित रंजित होतीं
कलित कामनाएँ अनुमोदित व्यंजित होतीं
वहाँ सरस जातीय तान रस बरसाए
देश प्रीति की उमग राग रुचिकर गाए
पूरित होती गरिमा सहित व्यवहार सुवाद्य स्वर
उसमें वीणा सहकारिता बजकर देगी मुग्धा कर।

जिसमें कलह विवाद वाद आमंत्रित न हों,
सद्भाव जहाँ पर बीज एकता का बोए
जहाँ सकल उदात्त भाव परम सफल।

जीवित रहे विवेक जहाँ होकर सबल
इस विद्यालय की आत्मा है अनेकता में एकता
होती विलोप जातीयता-धर्म-रंग-भाषा की भिन्नता।

अब सोचें, इतनी विशेषताओं वाला यह कौन-सा विद्यालय है ?
विद्यालय, जो एक सूत्र में बंधा एकता-निजता मय हों
छात्र-वृन्द भारतीय भाव से पूरित हों
आत्म त्यागरत रहते परहित की सोचें
बढ़ाए परस्पर प्यार औ कुम्हलाए मानस खिले
जी हां, ये हैं केंद्रीय विद्यालयम भारत की शान...भारत की पहचान।

मीता गुप्ता
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे, बरेली

18

मेरा देश

आइए विश्व को कराएं एक सैर
वैश्विक सभ्यता के मानस पटल पर जिसकी है अटल तस्वीर
प्रकृति के इंद्रधनुष सी सतरंगी जैसी संस्कृति हो जहां
हर तरफ सुषमा है ऐसी बिखरी
हो चाहे कश्मीर, या हो फिर कन्याकुमारी
एकलव्य जैसी गुरु दक्षिणा है जहां, पन्नाधाय जैसा बलिदान है जहां।

शौर्य गाथा छुपी हुई है जिस माटी में
महाराणा प्रताप और पृथ्वीराज जैसे शूरवीर हैं जहां
बुद्ध से गांधी तक अहिंसा की लहर है जहां
लक्ष्मी बाई की गाथा से अब्दुल हामिद जैसा पराक्रम है जहां।

यह मेरा देश जहां भगत से कलाम पूजे जाते हैं
जहां राम ,रहीम, ईश, महावीर की स्तुति हम गाते हैं
कौन है? किस देश की है यह दुर्लभ तस्वीर?
किसके नक्शे पर लिखी है ऐसी तकदीर?
आओ बताएं विश्व को
यह कोई और नहीं यह मेरा हिंदुस्तान है
जिसकी माटी और उन्नति पर मुझे अभिमान है
शावक के हैं गिने, जिसने दांत बचपन में
यह मातृभूमि है उस वीर भरत की
हां यह कोई और देश नहीं, बल्कि तस्वीर मेरे भारत की
हां मेरे अखंड भारत की।

रेखा चमोली
प्राथमिक शिक्षिका
केन्द्रीय विद्यालय भारतीय सैन्य अकादमी देहरादून

19

केन्द्रीय विद्यालय के मानस पुरुष

गागर में सागर भरते है,
करते रहते हैं नित नए काम,
हे! केन्द्रीय विद्यालय के मानस पुरुषों,
तुझको शत शत मेरा प्रणाम!

आप ही तो हो उद्धारक,
आप ही हो ज्ञान की खान,
आप में ही बसे रहते हैं,
इन बच्चों के प्राण,
हे! केन्द्रीय विद्यालय के मानस पुरुषों,
तुझको शत शत मेरा प्रणाम!

आप ही तो हो सखा पार्थ के,
आप ही ने बाँटा गीता का ज्ञान,
आप ही तो फैलाते रहते,
अंधकार में भी प्रकाश,
है! केन्द्रीय विद्यालय के मानस पुरुषों,
तुझको शत शत मेरा प्रणाम!

आप ही ने तो बदली है,
दुनिया, करते रहते नित नए काम,
आप ही फूँकते रहते,
मुर्दों में भी जान,
है ! केन्द्रीय विद्यालय के मानस पुरुषों,
तुझको शत शत मेरा प्रणाम!

दे दिए हैं देश को बहुमूल्य साठ साल,
करते रहे हो हरदम कमाल पे कमाल,
देश रखेगा हरदम याद,
मचाते रहो देश में धमाल,
है! केन्द्रीय विद्यालय के मानस पुरुषों,
तुमको शत शत मेरा प्रणाम!

महेश कुमार मीणा
स्नाकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय बद्दोवाल छावनी लुधियाना

20

मेरी हिंदी

बनी राजभाषा हिन्दी तो, कितना राष्ट्र सँवार
क्यों न राष्ट्रभाषा पद पर भी, हो अधिकार तुम्हारा,

हिन्दी है समृद्ध, श्रेष्ठ, विकसित, गतिशील सुभाषा
है समर्थ कर रही पूर्ण, जनमानस की अभिलाषा,
सहज सरल सम्प्रेषण क्षमता, अद्भुत अपनापन है,
गुरुता, लाघव का नव संगम, ललित लचीलापन है,
भाषा, नभ में कहाँ मिलेगा, हिन्दी सा ध्रुवतारा।

हिन्दी भारत माँ के स्वर्णिम युग के यश की गायक,
हिन्दी विविध कला संस्कृति कीए नित अविरल उन्नायक,
हिन्दी जिसने विस्तृत भारत भू को एक किया है,
हिन्दी जिसने सकल राष्ट्र माला में गूँथ दिया है,
अब तो अखिल विश्व में बहतीए हिन्दी की रसधारा।

संबंधों के अनुबंधों की कुशल लेखनी हिन्दी,
नवल सर्जना, अनुसंधानों, के माथे की बिन्दी,
है व्यापक प्रसार हिन्दी का, भारत के कण, कण में,
हिन्दी बसी शांति की नगरी, और बसी हर रण में,
यही कामना हिन्दी का, गूँजे चहुँदिशि जयकारा।

राष्ट्र चिन्ह गौरव हैं, द्योतक हैं सौभाग्य उदय के,
राष्ट्रगान, ध्वज, चिन्ह, राष्ट्रभाषा प्रतीक जय, जय के,
कहाँ राष्ट्रभाषा बिन भारत राष्ट्र पूर्ण हो पाया,
भारतेंदु, गाँधी के स्वप्नों ने असीम सुख पाया,
हिन्दी बने राष्ट्रभाषा तो, फैलेगा उजियारा।

बनी राजभाषा हिन्दी तो, कितना राष्ट्र सँवारा
क्यों न राष्ट्रभाषा पद पर भी, हो अधिकार तुम्हारा,

सन्तोष कुमार दुबे
पीजीटी अंग्रेज़ी
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 अर्मापुर, कानपुर

21

मेरा अमृत मेरा देश

चलो आज फिर भारत माँ की जय जय गाते हैं
आजादी के अमृत का इतिहास दोहराते हैं
बलिदानी मंगल पांडे को कौन भुला पाया है
झाँसी रानी का क्या तुमने कर्ज चुका पाया है
सीने पर गोली खाकर भी जो भारत की जय बोले
सन् सत्तावन के वीरों को कौन मिटा पाया है।

मृत कांग्रेस को संजीवनी तिलक लाजपत लाये
उधम सिंह और सावरकर ने हंस हंस शीश गंवाये
रंग दें बसन्ती चोला गाकर भगत सिंह इठलाये
हंस हंस कर फांसी पर झूले तनिक नही घबराये।

आजाद हिंद के वीरों ने जब दुश्मन को दहलाया
भारत छोड़ो के नारे ने हर गोरे को थर्राया
सर्वस्व न्योछावर की कीमत पर आजादी हमने पाई
पंद्रह अगस्त के शुभ दिन ही झंडे को सलामी लगाई।

गांधी सुभाष की धरती पर क्यों भ्रष्टाचार पनपता
भीमराव के भारत में क्यों हर लाचार सिसकता
चलो करें संकल्प कि हर दुखियारे को अपनाये
आजादी के अमृत पर्व पर झंडा तभी फहराये।

चलो आज फिर भारत माँ की जय जय गाते हैं
आजादी के अमृत का इतिहास दोहराते हैं।

अवधेश कुमार कौशल
पी.जी.टी. जीव विज्ञान
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2,
अर्मापुर, कानपुर

22

केन्द्रीय विद्यालय हमारा

सुंदर भविष्य की तस्वीर लिए, शिक्षा का यह मन्दिर प्यारा,
बच्चों को शिक्षित करने में, सबसे आगे केन्द्रीय विद्यालय हमारा।

इन गौरवशाली साठ वर्षों में, शिक्षा में हैं नाम कमाया,
नये नवाचारों को अपनाकर बच्चों का भविष्य संवारा।

पहले सैन्य बलों के बच्चों की, शिक्षा का था लक्ष्य हमारा,
अब सभी विद्यार्थियों का उज्ज्वल भविष्य हमें है प्यारा।

शिक्षा, खेल, पाठ्यसहगामी क्रिया, संगीत, कला, योग अपनाया,
कर निष्णात हरेक विधा में विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाया।

केन्द्रीय विद्यालय की हर कक्षा में एक लघु भारत सा पाया,
भाषाई विविधता के साथ ही हमने, ज्ञान का द्वार सजाया।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को अब केन्द्रीय विद्यालय ने अपनाया,
सभी शिक्षकों ने मेहनत से छात्रों में एक नव विश्वास जगाया,
“तत् त्वं पूषन् अपावृणु” वाक्य, को हमने आदर्श बनाया।

संभव जैन
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 सागर

23

केन्द्रीय विद्यालय की परिकल्पना

मेरा केन्द्रीय विद्यालय मेरा अभिमान है,
मेरे हिंद देश की देखो यह अनूठी शान है।
बात ना पूछो इसके गौरवमयी इतिहास की,
यह चमक है एक अलौकिक दिव्य ही आभास की।

नवसृजन के पथ पर जब हिंद कर रहा था संकल्पना,
वेद की ऋचा से पोषित हुई केन्द्रीय विद्यालय की परिकल्पना।
'तत् त्वं पूषण अपावृणु' का जयघोष लेकर,
शांति, प्रेम, सद्भाव को समर्पित शिक्षा का संदेश लेकर।

विश्व धरा को कुटुम्ब बनाने कदम से कदम था मिलाया,
कोटि-कोटि नन्हीं कलियों को मातृभूमि चरणों में समर्पित,
शिक्षा से पूरित युवा शक्ति पुंज पुष्प बनाया।
हिमाद्रि से जैसे बहती धाराएं अनेक है,
मेरे केन्द्रीय विद्यालय की इस भू धरा पर शाखाएं अनेक है।

न जाति-पाति का बंधन है ना भाषा यहां बनती बाधा है।
सुसंस्कृत नागरिक हो हर विद्यार्थी,
मेरे केन्द्रीय विद्यालय ने लक्ष्य यह साधा है।
हिंद की संकल्पना, अनेकता में एकता का सुर करता एक निनाद है।

मेरा केन्द्रीय विद्यालय मेरा मान है, अभिमान है।
शिक्षा जगत के गगन में आदित्य कोटि समान है।

तरुणा शर्मा
प्र. स्ना. शि. (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय, गज्ज भुंगा, होशियारपुर

24

के. वि. ही मेरी पहचान

के. वि. ही मेरा अभिमान, के. वि. ही मेरी पहचान,
के. वि. से ही रोज़ी मेरी, के. वि. ही मेरा स्वाभिमान,

सुबह-सुबह विद्यालय के, बच्चों को हँसता पाती हूँ,
सारी चिन्ता, सारे दु:ख, मैं भूल स्वंय को जाती हूँ,
बच्चों ने ही लक्ष्य दिया है, दे दी है मुझको पहचान,
के. वि. ही मेरा अभिमान।

ई.बी.एस.बी, शाला दर्पण, के संग यू.बी.आई है,
दीक्षा पोर्टल, एकम ने तो, जग में धूम मचाई है,
भाषा संगम सबको जोड़े, जैसे दो तन में इक प्राण,
के. वि. ही मेरा अभिमान।

के. वि. का मक्सद बच्चों को, अच्छे इन्सान बनाना है,
पहचान करा के खुद की, अन्तर शक्ति से जुड़वाना है,
देश विदेशों में के. वि. ने, दी है भारत को पहचान,
के. वि. ही मेरा अभिमान।

के. वि. एस. के कार्य तरीके, अन्दर तक छू जाते हैं,
इन सर्विस, इनडक्शन, हमको अति समृद्ध बनाते हैं,
'हिमान्शु' ने जो पाया कैसे, कर पाए उसका बखान,
के. वि. ही मेरा अभिमान।

हिमान्शु सहगल
स्नातकोतर शिक्षक वाणिज्य
के. वि. क्र. 2, फिरोजपुर छावनी
फाजिल्का रोड़, फिरोजपुर

25

मैं लघु भारत हूँ, मैं के.वि. हूँ

मैं लघु भारत हूँ, मैं के.वि. हूँ
मुझे देश से बहुत प्यार है
छः दशकों से एक लक्ष्य है
अपना भारत एक बनाना
अपना भारत श्रेष्ठ बनाना
अपना भारत सबल बनाना
भाषा संगम के द्वारा मैं
सबको एक सूत्र में बांधू
गणित और विज्ञान सिखाऊँ
तकनीकी में दक्ष बनाऊं
व्यवसायों का देकर ज्ञान
एन ई पी को सफल बनाऊं
यही स्वप्न है यही लक्ष्य है
मैं लघु भारत हूँ, मैं के.वि. हूँ

मुझे लक्ष्य से बहुत प्यार है
कला यहाँ पर रंग जमाती
गीत और संगीत बिखरते
खेल कूद से स्वास्थ्य निखरता
बाल वाटिका शान है इसकी
विविध संस्कृति का रक्षक मैं
भारत का हूँ मैं अभिमान
मैं लघु भारत हूँ, मैं के.वि. हूँ
मुझे देश से बहुत प्यार है

प्रदीप नारायण तिवारी
स्ना.शिक्षक (भौतिक विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय चित्रकूट

26

केवीएस - एक सूर्य

साठ वर्ष का केवीएस दिननायक, अविरल चलता जाता,
शिक्षा के मंदिर के कण- कण, गाते इसके गर्व की गाथा।

बच्चों की शिक्षा हित में, अनगिनत बदलाव हुए,
जो स्वप्न संजोए वत्सल ने, पूरे उनके ख्वाब हुए।

शिक्षा के आलय का परचम, उच्च शिखर लहराता हैं,
है के.वि.एस. की बात अलग नित, आगे बढता जाता है।

शिक्षा के मैदानों में, इसका कोई जोड नहीं,
अन्य अपाहिज से लगते, कर सकता कोई होड नहीं।

जो नया सवेरा लाता है, सूरज की बस बात यही,
जो प्रसरण प्रभा प्रबोध रोके, उस तिमिर तनिक औकात नहीं।

केवीएस एक सूरज है, जो नित प्रकाश का जरिया है,
जिसकी किरणों से महके, बच्चों की फुलबगिया है।

इस बगिया का हर एक फूल, सारे जग में महकेगा,
जब तक " भानु" रहे गगन में, "केवीएस" का नाम रहेगा।

बिजेन्द्र सिंह
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र.5 ग्वालियर

27

के.वि. संगठन की नहीं कोई मिसाल

साठ को कहते है सठिया, परेशां करे गठिया
मगर केविसंगठन हुआ साठ में और भी बढ़िया
सन तिरसठ से आज तक का हर पड़ाव अलहदा
देश के चारों कोनों में संगठन नाम गूंजें सर्वदा
के वि संगठन है शिक्षा जगत का वह तीर्थ जहाँ
शिक्षा के हर बदलाव का प्रयोग रहता है सफल वहाँ
अखिल भारतीय चयनित प्रशिक्षित शिक्षकों की फ़ौज
कक्षा में करें वह कौशल उन्नयन के नवाचार रोज
हर सबक सिखाएं जीवन जीने की बेहतरीन कला
ज्ञान के साथ सुलझाएं विद्यार्थी करियर का मसला
न भाषा न रूप न प्रान्त न धर्म न जाति की कोई दीवार
'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संबल है केन्द्रीय विद्यालय परिवार
'तत् त्वं पूषन अपावृणु' का ध्येय वाक्य मार्ग करे प्रशस्त
केवि संगठन पर सदैव बना रहता है माँ सरस्वती का वरदहस्त
क्या खिलाड़ी, क्या कलाकार, क्या वक्ता, क्या अभिनेता
हरफनमौला भविष्य गढ़ने से शुरू से है संगठन का नाता
स्वस्थ भारत, बलिष्ठ भारत, हुनरमंद भारत बनाने का संकुल
साठ का संगठन बना है गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अविराम मूल
साठ सालों की तपस्या साठ, सालों का अनुभव बेमिसाल
देश में नहीं के.वि. संगठन की और कोई कहीं मिसाल

कुन्दन राठौर
स्नातकोत्तर शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय बड़वानी

28

शिक्षा का ध्रुवतारा

अज्ञानता के अंधकार में,
जल रहा जो एक दिया।
देश में शिक्षा को जिसने,
एक नया स्वरूप दिया।

पढ़ सके विन कोई अड़चन,
वीर जवानों के नौनिहाल।
लक्ष्य निहित कर जन्मा के.वि.,
पंद्रह दिसंबर तिरसठ का साल।

उत्तम शिक्षा अनुशासित जीवन,
खेल कला विज्ञान सृजन।
रचनात्मक संस्कृतिमय परिवेश,
संस्कारों का जहां होता अर्जन।

मूल्यपरक गुणवत्तायुक्त शिक्षा,
जिसका एक प्रयास है।
छात्रों की प्रतिभा कौशल को निखारे,
इसकी अपनी एक छवि खास है।

साठ बरस से अविरत चमके,
अंतरिक्ष में जो ध्रुवतारा।
शिक्षा के हर क्षेत्र में अव्वल,
प्यारा केन्द्रीय विद्यालय हमारा।

पंकज रस्तोगी
स्नातकोत्तर शिक्षक (भौतिक विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय ओएनजीसी, अगरतला

29

60 साल का सुंदर लेखा

साठ साल का सुंदर लेखा
कितने रूपों में है देखा
विश्व फलक पर चमका नाम
के. वि. का गौरव गान
परिवर्तित नवयुग के संग
बही नवाचारों की तरंग
भाषा, ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति का सरंक्षण
हर भारती, को के.वि. का अभिनंदन
विद्यांजलि बालवाटिका भविष्य का युगबोध है
पुस्तकोपहार ज्ञान परम्परा का शोध है
के.वि. भारत का स्वर्णिम गौरव लाया है
मानवता के पथ पर सत्य ही सरसाया है
सत्य कहूँ मेरा के. वि. मेरा अभिमान है
के. वि. प्रगतिमान भारत का मान है।

डॉ. सुशील कुमार
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 जालंधर छावनी

30

मेरा प्यारा केन्द्रीय विद्यालय

मेरा प्यारा के.वि.
बड़ा ही न्यारा के.वि.
के वी की पहचान ही अलग जान पड़ती,
सबसे बडी इसकी शान दिखती।
किसी में कोई भेद ना ये कर पाता
प्रत्येक धर्म को ये आश्रय देता,
साथ ही सब में परस्पर सद्भाव और प्रेम सिखाता।

मेरा प्यारा के.वि.
बड़ा ही न्यारा के.वि.
बच्चे, अध्यापक सभी को यह
अपनापन महसूस कराता।
कुछ नया सीखने का अवसर दिलाता
इतने बड़े संगठन में अपनी एक नई पहचान मिलती।
आगे बढ़ने का मौका मिलता,
नई-नई उमंगों को पूरा करने का अवसर मिलता।

मेरा प्यारा के.वि.
बड़ा ही न्यारा के.वि.
कई तरह की प्रतियोगिताएँ और गतिविधियाँ कराता,
अनेक क्षेत्र में शिक्षकगण और छात्रों की पहचान बनाता
जैसे कभी फिट इंडिया क्विज़ जरिए
कभी आज़ादी का अमृत महोत्सव के जरिए तो
कभी परीक्षा पे चर्चा के जरिए
छात्रों को माननीय प्रधानमंत्री जी से जोड़े रखता
कभी जी-20 के जरिये हमारी पहचान बनाता।
खेलों के क्षेत्र में भी इसकी भूमिका अग्रणी रहती
हर छात्र को प्रत्येक खेल में अवसर देता
जो आगे आने वाली पीढ़ी को भी प्रेरित कर जाता।

मेरा प्यारा के.वि.
बड़ा ही निराला के.वि.
हिंदी पखवाड़े के जरिये
ये हिंदी का प्रचार- प्रसार करना सिखाता
केवल उत्तर भारत में ही नहीं बल्कि
पूर्वी, दक्षिण भारत के राज्यों में भी
हिंदी की गरिमा को,
हिंदी राजभाषा के जरिए कायम रखता।
हर भाषा को सीखने का अवसर देता,
सबको एकता का पाठ पढ़ाता
और एक भारत को इस तरह श्रेष्ठ बनाता।

मेरा प्यारा के.वि.
सबसे न्यारा के.वि.
जितना भी इसके लिए शब्द कहे जाएँ, उतने ही कम हैं
यहाँ आकर मुझे एक नयी पहचान मिली
अनुभव मिला, साथ काम करने वाले साथियों का प्यार मिला,
छात्रों का सम्मान मिला,
दक्षिण भारत में रहकर
एक नया अपनापन मिला और
यह के.वि. परिवार मिला,
राजभाषा के अंतर्गत काम करने का अनुभव मिला
साथ ही जगह-जगह भ्रमण करने का मौका मिला।
तभी तो मेरा के.वि. मेरी शान व मेरी पहचान बना।

प्रियंका शर्मा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 तिरुचिरापल्ली

31

ज्ञान का प्रकाश

“अ”का अक्षर पता नही था
आज आसमान की ऊँचाई पता है।
धरती, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा का ज्ञान है
शिक्षा मेरा गौरव है
के.वि. मेरा अभिमान है
अज्ञानता के अंधेरे से,
ज्ञान का प्रकाश दिखाया है
जब भी पड़ा मै भंवर मे
दे हाथ अपना उबारा,
जीवन के हर पल मे शिक्षा रस है तुम्हारा
कैसे करूँ मै आभार तुम्हारा
मिट्टी से, तुमने महकता चन्दन बनाया है
के.वि. मेरा आत्म सम्मान, अभिमान है।

संजय कुमार
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय पाटण

32

साठ वर्ष के कालखंड में

आज लेखनी फिर उपकृत है,
मन वीणा आज फिर झंकृत है।
भावों का उद्वेलन है,
मन में थोड़ा विचलन है।
के.वि.सं के 60 वर्ष का,
शब्दों में करना परिसीमन है।
1963 की 15 तारीख, माह दिसम्बर का स्वर्णिम दिन, जब के.वि. सं का संधान हुआ,
संस्कृति और सभ्यता के नए युग का मानो अनुसंधान हुआ।
नालंदा-तक्षशिला के स्वर्णिल युग की अतुल्य गाथा,
शिरोधार्य कर चला संगठन, गा अतीत की गौरव गाथा।
विद्या की अजस्र धारा का यह अलौकिक स्रोत है,
मन मुग्ध, हर्षित आज जैसे लिख रहा पुनीत श्लोक है।
एकता के सूत्र में बंधे हुए सब लोग हैं,
भेद है न रंग का, न भाषा, वेष ,परिवेश का।
न द्वेष है, न क्षोभ है,
विस्तार है बस सौहार्द के रत्नेश का।
नियम,शील, तप ,सदाचार का यह अडिग हिमालय है,
नन्हे किसलय पोषित होते जिसमें, यह अनुपम, पुनीत वो आलय है।
राष्ट्रीय एकता और भारतीयता का यह मूर्त प्रतिबिंबन है,
प्रतिभा, उत्साह और रचनात्मकता का महज नहीं यह अंकन है।
वसुधैव कुटुंबकम की जो पाटी, पढ़ी सुनी थी मैंने बचपन में,
साकार रूप में प्रस्फुटित हुई वह के.वि.सं के आंगन में।
तुम ही मेरी कर्म स्थली, तुम ही मेरा अभिमान हो।
तुम ही पहचान, तुम ही मेरा सम्मान हो।
साठ वर्ष के कालखंड में नित नवीन इतिहास रचे,
नव चेतना, नवाचार, सौहार्द ,प्रेम के गीत सजे।
पूर्णिमा के चांद सम संगठन का धवल विस्तार हो
नित नवीन उन्नयन का पथ निष्कंटक अविराम हो।।

डॉ. चारू शर्मा
प्राचार्या
डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय विद्यालय
राष्ट्रपति भवन परिसर, नई दिल्ली

33

ज्ञान दान के छह दशक

छह दशकों से अहर्निश
ज्ञान की जोत जला रहा
बाज़ारवाद की शोर में
राष्ट्रवाद का अलख जगा रहा।
मशीनीकरण के दौर में यह
संवेदना का शीतल अहसास है
'फैशन' की आपाधापी में
यह संस्कृति का शंखनाद है।

कुछ तो है इसमें बात
जाड़ा गर्मी या हो बरसात
कालजयी अवधूत की भांति
ज्ञान पुष्प खिला रहा निर्घात।
सबके सपनों को यह साकार कराता
भारतीय संस्कृति का यह ध्वजवाहक
सर्व धर्म समभाव का अलख जगाता
इसीलिए यह 'मिनी इंडिया' कहलाता।
अहर्निश अविरल ज्ञान की गंगा बहाता
विद्यार्थियों की अभिरुचियों को भी मांजता
क्या अमीर क्या गरीब, सबको यह भाता
समभाव से यह भी सबको है अपनाता ।
अविचल कर्तव्य पथ पर है टिका हुआ
अविरल अटल कर्म पथ पर बढ़ता हुआ
हर भारतीय के उम्मीद की किरण है यह
भारत की शिक्षा नीत का ध्वजवाहक है
यह मात्र संगठन नहीं, संस्कार है
भारत व भारतीयता का गौरवगान है
ऐसे गौरवशाली संस्थान को
नमन है! वंदन है! अभिनंदन है!!

डॉ. शुभ नारायण सिंह
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय विद्यालय
राष्ट्रपति भवन परिसर, नई दिल्ली

34

ज्ञान का उद्गमस्थल

केन्द्रीय विद्यालय : वर्तमान में ज्ञान का उद्गमस्थल
मैं ज्ञान हूँ इस जगत को, भगवान् का वरदान हूँ,
चिंतन अमूरत रूप में हूँ, मूर्त शब्द-विधान हूँ।
यदि मूर्त में व्यवहार हूँ, तो सूक्ष्म में संज्ञान हूँ,
हूँ सुन्दरम अनुभूति मैं, हर सभ्य का परिधान हूँ।
हूँ मैं यंत्र रूप में यांत्रिकी, जिज्ञासु का विज्ञान हूँ,
मैं हूँ लेखनी विद्वान् की, मैं ही राष्ट्र का संविधान हूँ।
अरि हूँ यहाँ अभिमान का, दाता मैं ही सम्मान का,
प्रतिकारकर्ता मैं स्वयं ,कौटिल्य के अपमान का।
यह प्रेम भारतवर्ष से, जग में अलग ही बात है,
संगम सनातन रूप से, मेरा जगत विख्यात है।
सशरीर तट पे सरस्वती के, जन्म जब मैं पा गया,
तब वेद के नव-नाम से, जग में पुकारा मैं गया।
फिर उपनिषद-आरण्यकों, का रूप मैं धरते हुए,
फैला धरा पर विद्व की, जयकार मैं करते हुए।
मेरा भवन निर्मित हुआ, प्रस्तर शिला से तछशिला,
नालन्द से होते हुए मैं, बल्लभी में जा मिला।
मैं आज अगणित रूप में, भू पर सकल आबद्ध हूँ,
मध्याह्न के दिनकर सरिस, जिज्ञासुओं में दग्ध हूँ।
संस्थान के.वि. है अभी, इस ज्ञानियों की भूमि पर,
अनुराग इतना है मुझे, वह बन गया है आज घर।
अध्याय, अध्यापक यहाँ, आबद्ध अध्येता सभी,
इस राष्ट्र की बस एकता के, सूत्र-त्रय हैं ये अभी।
जब तक सुरक्षित हैं यहाँ, केवी सरस इस भूमि पर
बिन जल खिले जलजात, देखोगे यहाँ मरुभूमि पर।।

रवि कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय पय्यन्नूर

35

नन्हा हिंदुस्तान

शिक्षा का पैग़ाम यहाँ है, ज्ञान का उत्तम धाम यहाँ है।
संस्कृति की गोदी में पलता, नन्हा हिन्दुस्तान यहाँ है।
तत्त्वंम् पूषन् अपर्वनु है लक्ष्य हमारा उद्घोषक,
अँधियारे को दूर भगाये, नव-जागृति का पोषक।
टैगोर, अशोक रमन, शिवाजी- महापुरुषो की दिव्यधरा
विविधता मे एकता और आधुनिकता में परम्परा।
भूल चुके जो मौलिक बातें, फिर से उनको सिखलाते हैं
'बैक टु बेसिक' आगे लाये, जो बच्चे पीछे रह जाते हैं।
नए सफ़र मे 'नन्हे मुन्हे' अपने पंख जो फैलाते हैं।
खेल-खेल में शिक्षक उनको उड़ने के गुर सिखलाते हैं।
खुली किताबों जैसा चेहरा, शाला दर्पण दिखाता है
पारदर्षिता की परिभाषा, सूचना तकनीकि सिखाता है।
भारत होगा स्वस्थ तभी, जब बच्चे होंगे स्वस्थ शरीर।
योगा, तैराकी, खेलकूद से निकलेंगे बलवान।
जब हर शिक्षक हर बालक के.वि. परिवार से जुड़ जाएगा,
उन्नत होगा भारत और विश्वगुरु कहलाएगा।

नेहा केडिया
पी जी टी (अंग्रेजी)
केन्द्रीय विद्यालय जेएनयू एनएमआर

36

हम शिक्षा के प्रहरी

साठ साल से गौरव मंडित,
कर भारत का उन्नत भाल,
नवयुग की हम तक्षशिला हैं,
भारत भावी रहे उजाल,
हम नवाचार, नव संस्कृति,
नवयुग का करते आगाज़,
आओ पूजन अर्चन कर लें,
सजा आरती का नव थाल।
हम शिक्षा के परम प्रहरी, हम के.वि. के नौनिहाल,
हम के वि के नौनिहाल हैं, हम के.वि. के नौनिहाल।

अग्रिम पंक्ति सदा हमारी,
हम हैं नायक कल के,
आसमान के हम परिंदे,
हम मालिक जल, थल के,
हम भारत, भरत हम ही हैं
हम राम-कृष्ण वतन के,
गड़ी क्षितिज पर अपनी दृष्टि
हम पाएं मंजिल जतन से,
हम अकाम, हमसे है दीक्षा,
हम ही भारत श्रेष्ठ बनाएं,
हम शिक्षा के परम प्रहरी, हल करते सभी सवाल
हम के वि के नौनिहाल हैं, हम के वि के नौनिहाल हैं।

डॉ. घनश्याम बादल
स्नातक शिक्षक (अंग्रेजी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 रुड़की

37

केवि गीत सुनाता हूँ

मैं केवि का अध्यापक, केवि गीत सुनाता हूँ,
संग आपके मिलके , स्थापना दिवस मनाता हूँ।

मास दिसंबर, पंद्रह तारीख़ और तिरेसठ का वो साल
नींव पड़ी जिस दिन केवि की देश हमारा हुआ निहाल
एनसीईआरटी पाठ्यक्रम और सीबीएसई बोर्ड यहाँ
शिक्षा का अवसर जैसा है, वैसा मिलता और कहाँ ?
बारह सौ से ज़्यादा मंदिर .., मैं आरती गाता हूँ ।

देश की सेना ने अपना सब देश के नाम किया है।
मिशन हमारा श्रेष्ठता-गति-नवाचार करना है ।
बिना रंग जो धुँधला सपना, वहाँ रंग भरना है।
राष्ट्रीय एकता का मैं एक नया बीज लगाता हूँ।

मैं केवि का अध्यापक, केवि गीत सुनाता हूँ ।

{ ... सबसे ....}
आओ करें प्रतिज्ञा मिलकर भारत श्रेष्ठ बनाएँगे ।
जाति-धर्म का वैर-भाव और भ्रष्टाचार मिटाएँगे ।
आतंक-ग़रीबी मिटा-मिटा हम, देश को फिर चमकाएँगे।
शिक्षा का फैला के उजाला, विश्वगुरु हो जाएँगे ।
देश को नम्बर वन करना, वो शपथ याद मैं दिलाता हूँ।

मैं केवि का अध्यापक, केवि गीत सुनाता हूँ ।

{बच्चों से ....}
आज आपकी क्षमता से कौन यहाँ अनजाना है ?
कैसा भी हो लक्ष्य कठिन , बस वो आपको पाना है।
पर्वत को दो चीर , वहाँ से गंगा कई निकालो तुम ।
गर्व हो रहा मुझको, जो मैं तुम्हें पढ़ाता हूँ ।

मैं केवि का अध्यापक, केवि गीत सुनाता हूँ।
संग आपके मिलके, स्थापना दिवस मनाता हूँ।

घनश्याम
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय गोपेश्वर, चमोली

38

राष्ट्र की शान केवियन

धरती-गगन में देश का उसने बढ़ाया मान है,
सारे जहाँ में केवियन पाते सदा सम्मान है।

देते हैं सच का साथ चाहे सामने पहाड़ हो,
ललकारते अन्याय को चाहे कठिन हालात हों,
जो ना डिगे संघर्ष में ऐसा वो दृढ़ ईमान हैं,
सारे जहां में केवियन पाते सदा सम्मान है।

पढ़ने में खेलने में वो हर क्षेत्र में गुणवान है,
दुनिया में कहे जाते बहुमुखी प्रतिभावान है,
जिस ओर बढ़ाए कदम, उसमें कमाया नाम है,
सारे जहां में केवियन पाते सदा सम्मान है।

जिनके लिए हर रिश्ते में स्वदेश ही प्रधान है,
नेकी करें सदा हृदय में राष्ट्र का सम्मान है,
भारत महान देश की ये आन बान शान हैं,
सारे जहां में केवियन पाते सदा सम्मान है।

नदियों में प्राण डालते तालाब को बचाए जो,
पर्यावरण से प्रेम हैं धरती हरी बनाएँ वो,
वन, पक्षी, जीव, प्रकृति की ये अनसुनी आवाज़ हैं,
सारे जहां में केवियन पाते सदा सम्मान है।

जिसके लिए हर जाति, धर्म, वर्ग इक समान है,
जिसके लिए मनुष्य सिर्फ कार्य से महान है,
सच्चे हैं दिल के सद्गुणी चरित के आसमान हैं,
सारे जहां में केवियन पाते सदा सम्मान है।

डॉ. योगेश कुमार जैन
सह-प्रशिक्षक-पुस्तकालयाध्यक्ष
केन्द्रीय विद्यालय संगठन जीट, ग्वालियर

39

मेरा केन्द्रीय विद्यालय ही मेरा अभिमान है

ज्ञान का उजाला फैलाता है,
अज्ञान के तम को हराता है,
अनगढ़ बच्चों में संस्कारों को गढ़ता है,
बाल मस्तिष्क को परिषोधित करता है।

मेरा केन्द्रीय विद्यालय ही मेरा अभिमान है,
जिसके कारण मेरी पद-प्रतिष्ठा और सम्मान है।

व्यायाम से बच्चों का षारीरिक विकास करवाता है,
वैज्ञानिक अनुसंधानों से अंध-विष्वासों को हटवाता है,
योगासन से बच्चों के आत्म-बल को बढ़वाता है,
प्रताप, बोस, गांधीजी के विचारों से अवगत करवाता है,
हर बच्चे के मन में राष्ट्र-चेतना को जगवाता है।

मेरा केन्द्रीय विद्यालय ही मेरा अभिमान है,
जिसके कारण मेरी पद-प्रतिष्ठा और सम्मान है।

देष की सभ्यता और संस्कृति के परिचायक है,
हमारे विचारों और संस्कारों के परिष्कारक है,
सुसभ्य समाज में रहने लायक हमें बनाया है,
जीवन के संघर्षों से लड़ना हमें सिखाया है,
जैसे सान्दिपनी ने कान्हा को श्रीकृष्ण बनाया है।

मेरा केन्द्रीय विद्यालय ही मेरा अभिमान है,
जिसके कारण मेरी पद-प्रतिष्ठा और सम्मान है।

अदिति सक्सेना
प्राथमिक शिक्षिका
केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 एसटीसी सदर, जबलपुर

40

मेरा के.वि. मेरा अभिमान

मेरा के.वि. मेरा अभिमान इससे बढता मेरा मान
यह फैलाता ज्ञान विज्ञान, जिससे बढता है सम्मान।
इस बगिया में फूल खिले हैं रंग बिरंगे प्यारे प्यारे
लगते हैं यह सब को न्यारे, भारत माँ की आँख के तारे।
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, समुद्रपार भी कदम बढाए
शिक्षा जगल की ऊँचाईयों को मेरा के.वि. छूता जाए।
नवाचार के होते यहाँ नित नूतन प्रयोग,
खेल-खेल में बालक सीखें कला कौषल उद्योग।
मनवीय मूल्यों का होता है यहाँ संवर्धन
मन वचनों से हर पल करते भारत का अभिनन्दन।
तत्वम् पूषण अपावृणु का मंत्र जग में फैलाता
वसुदैव कुटुम्बकम का सार यह समझाता
सृजनात्मक सोच, उन्नत विचारों का होता जहाँ है मान
शिक्षा जगल का ध्रुव तारा, मेरा के.वि. मेरा अभिमान

अपर्णा देवी
टी जी टी (जीव विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय गढा, जबलपुर

41

केन्द्रीय विद्यालय का ऊंचा परचम

अनूठे हैं विद्या के मंदिर,
सारे विश्व में अनूठे संस्थान।
केन्द्रीय विद्यालय का ऊंचा परचम,
अद्भुत भारत शिक्षण संस्थान।

शिशु शैशव जब विद्यालय आते,
मात-पिता सम गुरुओं को पाते।
ज्ञान जगत का पाते हर दिन,
करते नव भारत का विधान।

साहित्य इतिहास की शिक्षा देते,
संस्कारों का करते निर्माण।
आशावान हो ताकता विश्व,
भारत का अपूर्व संचित ज्ञान।

केन्द्रीय विद्यालय भारत का गौरव,
जगत का होता नव निर्माण।
अमर वेदों का आधार लिए,
सर्वोच्च रहे भारत का मान।

ज्योति चौहान
टीजीटी (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय धर्मशाला छावनी

42

केन्द्रीय विद्यालय-ज्ञान का मंदिर

यही है ज्ञान का मंदिर, कला विज्ञान का मंदिर,
हमारा केन्द्रीय विद्यालय, वतन की शान का मंदिर।

ज्ञानामृत देता छात्रों को, है ध्येय बड़ा इसका पवित्र,
आलोकित करता तम हरता, करता निर्मित इनका चरित्र,
देदीप्यमान ज्ञानार्जन से, होते बालक उन्नत ललाम,
जीवन में सदा बढ़े आगे, उन्नति शिखर चढ़े अविराम,
हमारी आन का मंदिर, यही सम्मान का मंदिर,
हमारा केन्द्रीय विद्यालय, वतन की शान का मंदिर।

अनुशासित जीवन का महत्त्व, और देश प्रेम है सिखलाता,
जूझो संघर्षों से डटकर, सत्कर्म मार्ग है बतलाता,
इसके आदर्शों पर चलकर, जीवन सफल बनाएंगे,
भेदों से ऊपर उठकर हम, मानवता पाठ पढ़ाएंगे,
यही कल्याण का मंदिर, यही वरदान का मंदिर,
हमारा केन्द्रीय विद्यालय, वतन की शान का मंदिर।

यह चमन हमारा उन्नति का, प्यार जहाँ बसता है,
सभी यहाँ भ्राता-भगिनी सम, तन-मन यहाँ महकता है,
अपने इस विद्या मंदिर का,कोना-कोना महकाएंगे,
स्वर्ग सदृश सुखदायक हो, ऐसा चमन बनाएंगे,
यही निर्माण का मंदिर, मधुर मुस्कान का मंदिर,
हमारा केन्द्रीय विद्यालय, वतन की शान का मंदिर।

नव युगानुरुप शिक्षा पाकर, हम जीवन धन्य बनाएं,
तकनीकी ज्ञानदृष्टि लेकर, आगे ही बढ़ते जाएं,
जीवन बगिया महकाएं अपनी, खिले कौशल के फूल,
मानव सेवा को बढ़ें आगे, मर्दित करके सारे मग शूल,
यही आह्वान का मंदिर, महानुसंधान का मंदिर,
हमारा केन्द्रीय विद्यालय, वतन की शान का मंदिर।

इसकी शिक्षा सदा असत से, रखती हमको दूर,
सत्पथ के हम अनुगामी हों, राग-द्वेष हों चूर,
हटे आवरण अज्ञानता का, दिखलाए नया उजाला,
शक्ति मिले नव निर्माणों को, खुले जीर्णता का ताला,
नवल शुचि प्राण का मंदिर, लक्ष्य संधान का मंदिर,
हमारा केन्द्रीय विद्यालय, वतन की शान का मंदिर।

फूलचंद्र विश्वकर्मा
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2, हलवारा, लुधियाना

43

भारत का गौरव: केंद्रीय विद्यालय

प्यारा सुंदर न्यारा आलय
शिक्षा का है यह देवालय

लघु भारत की सुंदर भाषा
नव जीवन की है अभिलाषा

सिद्ध सभी संकल्प हुए हैं
बीज वृक्ष बन गगन छुए हैं

नए गीत गुण गान लिखेंगे
भारत का अभिमान लिखेंगे

नई नीति प्रयोग हुए हम
जीत नई सुयोग हुए हम

विश्व पटल पर अतिशोभित है
ज्ञान ज्योति से आलोकित है

बालवाटिका में खिलते मन
चहके है पुष्पों से उपवन

कण-कण में बसे एक भारत
है एक भारत - श्रेष्ठ भारत

कला उत्सव की यहीं थाती
सँवर प्रतिभा नित ही जाती

नई शिक्षा नीति अपनाई
सकल विश्व में पहचान बनाई

बहती जाए संस्कृति सरिता
संकल्पों की नूतन कविता

खेलकूद में मान बढ़ाते
विज्ञान नभ में हम छा जाते

एफ एल एन, निपुण भारत
ज्योतिर्मय एक-एक दीपक

एक गीत की पावन सरगम
है मनभावन भाषा संगम

जन जन में फैलाए सौरभ
के.वि. बना भारत का गौरव

प्यारा सुंदर न्यारा आलय
शिक्षा का है यह देवालय।

मनप्रीत कौर
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय लालगढ़, जाटान

44

कहानी केन्द्रीय विद्यालय की

60 साल के हुए केन्द्रीय विद्यालय,
कर रहे हैं देश को रोशन,
है इनसे भारत का भविष्य उज्ज्वल,
बना रहे बच्चों को सबल।
हुआ था उदय जब,
नहीं था इतना बड़ा तब,
आज है संख्या भारी,
बना रहे नागरिक संस्कारी।
भारत ही नहीं,
बजा रहे विदेश में भी डंका,
पढ़ाई, खेल, या हो ज्ञान संस्कृति,
हर तरह से लाभान्वित हो रही जनता।

स्वर्ण सिंह
टी.जी.टी. (अंग्रेजी)
केन्द्रीय विद्यालय धर्मशाला कैंट

45

हमारा FLN मिशन

आओ सब मिल कर उड़ चलें
FLN मिशन के पंखों पर,
जहां पर होगा,
सब बच्चों का विकास समग्र।

FLN यानि बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता
इस मिशन के लक्ष्यों को,
2026-27 तक प्राप्त करना
होगी हमारी प्राथमिकता।

बाल वाटिका में करेंगे हम
अक्षरों और ध्वनियों की पहचान,
और पाएंगे 1 से 10 तक,
अंकों का ज्ञान।

विद्याप्रवेश के तीन माह में
खेल-खेल में करेंगे हम स्कूल की तैयारी,
जिससे महकेगी,
शिक्षा उपवन की क्यारी-क्यारी।

कक्षा प्रथम में अर्थ के साथ पढ़ेंगे छोटे वाक्यों को,
जिनमें होंगे चार से पाँच शब्द सरल,
और 99 तक की संख्या को पढ़ कर,
करें जोड़ घटाव हल।

कक्षा दो में पढ़ेंगे,
45 से 60 शब्द प्रति मिनट,
999 तक की संख्या के साथ खेलेंगे झटपट।

कक्षा तीन में कम से कम
60 शब्द प्रति मिनट प्रवाह में पढ़ेंगे हम,
और 9999 तक की संख्या को पढ़कर
सीखेंगे गुना भाग का क्रम।
आओ हम सब मिलकर
निपुण भारत का सपना करें साकार,
तभी बनेंगे हम बच्चे
भारत की उन्नति का आधार।

ऋतु शर्मा
प्राथमिक अध्यापिका
केन्द्रीय विद्यालय भनाला (गोहजू)

46

अपना के. वि. अपनी शान

अपना के. वि. अपनी शान, इस पर न्यौछावर अपनी जान,
साठ वर्ष से बढ़ा रहा है, जग में हम सबका मान।

साठ वर्ष परिपक्व हो गया, शिक्षा का ये वृक्ष हमारा,
हम इसके रक्षक हैं और ये, सबसे प्यारा सबसे न्यारा।
केन्द्रीय विद्यालय गूँज रहा है, चारों ओर जान से प्यारा,
इसका नाम करेगे रोशन, ऐसा है संकल्प हमारा।

अपना के. वि. अपनी शान, इस पर न्यौछावर अपनी जान,
साठ वर्ष से बढ़ा रहा है, जग में हम सबका मान।

सरस्वती का वरदहस्त है, ज्ञान की गंगा का है उदगम,
जो डूबे इसके सागर में, निश्चय पाता मार्ग वो सुगम।
पूँजी ऐसी देता के.वि., जिसको चोर चुरा न पाए,
दिन दूना बढ़ता ही जाए, ऐसी राह हमें दिखलाए।

अपना के. वि. अपनी शान, इस पर न्यौछावर अपनी जान,
साठ वर्ष से बढ़ा रहा है, जग में हम सबका मान।

तरकश में हैं तीर गजब के, जल थल और आकाश भेद दें,
प्रहरी बनकर खड़े अडिग हैं, दुश्मन के हर वार भेद दें।
चमक रहा है सूरज इसका, इसकी विजय सदा ही होगी,
सबसे बेहतर अपना के.वि., जय जयकार सदा ही होगी।

अपना के. वि. अपनी शान, इस पर न्यौछावर अपनी जान,
साठ वर्ष से बढ़ा रहा है, जग में हम सबका मान।

अनिल कुमार
सहायक अनुभाग अधिकारी
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय आगरा

47

शिक्षा नभ का नक्षत्र

हमको अभिमान हमको है हर्ष,
प्रगति पथ पर प्रशस्त प्रतिवर्ष।
शिक्षा के नभ का यह नक्षत्र,
मना रहा शुभ साठ-वर्ष।

ज्ञान ज्योति से आलोकित है,
विश्व पटल पर अति शोभित है।
संवाहक है अपनी संस्कृति का,
लघु भारत का झलकता रूप है।

किरणें फैली हैं दिक्-दिगन्त,
सुषमा ऐसी जैसे वसंत।
ज्ञानामृत से तृप्त हुए सब,
सुरभित देखो ये वृन्त-वृन्त।

नई नीति के प्रतिमानों संग,
हो रहे सफल शिक्षा के रंग।
सिद्धि पाएं संकल्प सभी,
आह्वान करता केविसं।

डॉ. मनोज कुमार गुप्ता
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र.1, कोटा

48

कह रही हूँ गाथा आज मैं

कह रही हूँ गाथा आज मैं
के.वि. संगठन है मेरा अभिमान ये।
इसके हाथों सँवरा है जीवन मेरा,
ना केवल मेरा पूरे हिन्दुस्तान का।
छोटा मुँह बडी बात ना कहना यारों।
ये तो है पवित्र मंदिर शिक्षा का,
सद्भावना का,एकता का, संस्कृति का।
यहाँ ना कोई हिन्दू, ना मुसलमान, ना ईसाई, ना सिक्ख,
यहाँ तो सब हैं भाई–भाई।

शिक्षार्थ आइए, सेवार्थ जाइए,
ऐसी सीख बाँटी है सदा से
“एक भारत श्रेष्ठ भारत”के सपने को करने साकार
है दृढ़-प्रतिज्ञ हर इसका शिक्षार्थी।
पर्यावरण जागरूकता, स्वच्छता संदेश,
चारो ओर फैलाएगा इसका विद्यार्थी,
विज्ञान और तकनीकी से कर साक्षात्कार
वह दिन दूर नहीं
जब बच्चा बच्चा गाएगा
मेरा अभिमान है केन्द्रीय विद्यालय संगठन
जी हाँ! के.वि. संगठन मेरा अभिमान है।

लता रामानुजन
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका
केंद्रीय विद्यालय केल्ट्रोन नगर, कण्णूर

49

हृदय हर्ष गर्व से कहता

ज्ञान की अलख जगाकर,
विश्व में बनाई पहचान है।
हृदय हर्ष और गर्व से कहता,
मेरा केवि मेरा अभिमान है।

विविध संस्कृतियों का संगम यहाँ,
अखिल भारत की तस्वीर है।
अज्ञान तमस को हरता केवि,
सब विद्यालयों के लिए नजीर है।
नित नूतन उपलब्धियों और कार्यों से,
इसका सर्वत्र हो रहा गुणगान है।
हृदय हर्ष और गर्व से कहता,
मेरा केवि मेरा अभिमान है।

एक भारत श्रेष्ठ भारत का सन्देश यहाँ,
फिट इंडिया से बच्चों को स्वस्थ बनाना है।
डिजिटल इंडिया से दक्ष बनाकर,
प्रगति पथ पर आगे बढ़ाना है।
देश की भावी पीढ़ी को तैयार करने में,
इसका महती-महती योगदान है।
हृदय हर्ष और गर्व से कहता,
मेरा केवि मेरा अभिमान है।

आदर्शों की बुनियाद यहाँ पर,
अनुशासन की पावन कहानी है।
जीवन संघर्षों में तपकर कुंदन बनता,
यहाँ का हर बच्चा सच्चा सेनानी है।
सच्ची मानवता का सन्देश फैलाता,
पूरी वसुधा भी करती इसका बखान है।
हृदय हर्ष और गर्व से कहता,
मेरा केवि मेरा अभिमान है।

दिलीप कुमार शर्मा
स्नातकोतर शिक्षक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल, जैसलमेर

50

पंच-प्राण गीत

हम अमृत पीढ़ी के बच्चे,
हम हैं संकल्पों के सच्चे
देश की उन्नत शान बनें
हम पंच-प्राण गुण गान करें।

प्रण है ये भारत हो विकसित
गौरव का हस्ताक्षर अंकित,
प्रण है-अपनी भव्य विरासत
स्वर्ण काल के आगे आकर
आज नए सपनों को फिर जीवंत करें,
प्रण है- अपने कर्तव्यों का बोध करें
कौन हैं हमको -क्या है बनना
राष्ट्र हितों में आओ इसका शोध करें,
प्रण है सबका साथ न कोई अब छोड़ेगा
अपनी इस मुट्ठी को कोई न तोड़ेगा,

इन सुदृढ़ संकल्पों का आओ बार- बार आह्वान करें
हम पंच-प्राण गुणगान करें ।

हम अमृत पीढ़ी के बच्चे,
संकल्पों के नेता सच्चे
देश की उन्नत शान बनें
हम पंच-प्राण गुण गान करें।

ऋतु पल्लवी
सहायक आयुक्त (प्रशि.)
के.वि.सं. मुख्यालय, नई दिल्ली

51

Celebrating the Institution of KV

Kendriya Vidyalaya is a place close to my heart,
Where knowledge and values are imparted from the start.
I'll take you through the school,
The memories, the moments, and the golden rules.

Let me tell you about KV, setting the scene;
Describing the beauty of my school, so serene.
I'll highlight the teachers, the pillars of wisdom,
Guiding students towards a bright future, shaping their kingdom.

Now, let me take you to the classrooms, so alive;
Where learning and curiosity strive.
The desks, the books, the chalkboard and the smart board,
A place where dreams and aspirations are stored.

Next, let us delve into the playground, full of cheer;
Where friendships are formed, year after year.
The laughter, the fun, and the games they play,
Creating memories that will forever stay.

How can I forget to mention the library, a treasure trove of knowledge;
Where books and digital books open doors and broaden our intellect.
The endless rows of stories and tales,
Inspiring young minds, setting their sails.

I'll paint a picture of the laboratories, so bright;
Where experiments ignite our scientific minds.
Beakers, test tubes and bubbling potions,
Unleashing our curiosity, igniting our emotions.

Lastly, I'll reflect upon the values we learn;
Respect, integrity, and a passion that burns.
Kendriya Vidyalaya, a place of pride,
Fostering character, standing tall with stride.

Kendriya Vidyalaya, a network of schools;
Where knowledge and values rule,
With a motto of "Tattvaṁ pūṣaṇa apāvṛṇu".
They nurture young minds, through and through.

So let us celebrate this institution;
That provides education with dedication.
For Kendriya Vidyalaya, my pride,
With which forever, my love and support reside.

Sana Anwar
Librarian
KV GC CRPF, Bijnaur, Lucknow

52

We, The Teachers of KVS

We, the teachers of KVS,
We have the power...
To mould, to change, to create, to nourish...
We are not just teachers; We are the builders…
And we don't just build,
We nurture, we facilitate, we cherish, we cultivate…

Our tools are- Thoughts and knowledge, our will and love for teaching...
We don't just teach, we help.
Our substance- The sweet and kind,
Playful yet, innocent mind- The future;
We don't just teach, we attend to their hearts, their minds...
Their sorrows and their woes,
Their enemies and their foes.

We've the power to turn their misery into giggle of happiness...
The power to foster all four S's
Self-confidence, self-assurance, self-esteem and self-worth,
We've the power, but, we've a far greater responsibility,
Because, we are planting the seeds for future leaders, innovators
We the teachers of KVS, we don't just teach;
We transform society, we change lives.

Vartika
PRT
KV Sidhi

53

The Difference I've Made

My KV, my pride,
Where I have the privilege to guide.
Each day I walk through its halls,
With a sense of purpose and awe.

I teach and I inspire,
To help students reach higher,
I work hard to create,
An environment that's great,
Where students feel safe and free,
To be themselves and to dream, you see.

My KV, my pride,
Where I have the chance to make a difference,
And to help shape the future, with each student's unique brilliance.
And when they graduate from my class,
And move on to their next task,

I know they'll take with them,
The lessons they've learned,
And the memories they've made,
And I'm proud I had a role to play,
A part in their journey, come what may

Garima Joshi
PGT
KV IMA Dehradun

54

Sparkling Legacy: Six Decades' Radiance

In the Province of Knowledge's Flight,
KVS@60, shining so bright, of wisdom's delight.
Stands so tall beneath the azure sky, a guiding light,
A beacon of learning right, illuminating eager minds aright.

From the yester years to this day,
A legacy of excellence, KVS proudly display.
A tapestry woven with laurels so grand,
In every achievement, firmly it stands.

Science and arts, nurtured with care,
Unleashing potential, beyond compare.
Mathematical prowess, minds so keen,
Innovation and discovery, regular routine.

In sports and games, spirit soar high,
In fields of triumph, talents truly vie.
Cultural spectacles that touches the sky, hearts aligned,
With discipline and values, to serve the human Kind.

Teachers, mentors, with hearts so pure,
Guiding young souls, beyond compare.
With passion ablaze, they light the way,
KVS@60, forever shall sway.

In gratitude, we raise a cheer,
KVS@60, may prosper each year.
A diamond's journey, strong and fonder,
Illuminating infinitely, reaching the wide blue yonder.

T. UMA MAHESWARI
Training Associate English
KVS ZIET, Gwalior

55

MY KV- A Stepping Stone & A Destination

When I think of KV… Believe me it's not just a building
For me it's like my home… my temple
A place where I was built…
I studied here and now I am teaching

A journey from a student to a teacher and a mentor
It's the most amazing and fulfilling part of my life
It's not just a building having different rooms, halls, labs and grounds.
It's actually an emotion that walks with me, talks with me and laughs with me.

It's like the different organs of my body…
And for that I try my best to keep it healthy and smiling and full of life always
It is the place where I find safe and easy to breath,
Easy to live and easy to create…

Easy to explore and easy to innovate…
Easy to understand and easy to communicate…
Easy to learn and easy to serve…
Easy to sustain and easy to express…

It is here I get a chance to adore the beauty of knowledge.
And pass it on to the gems and pearls of future.
And to those who come to this place with a giggling sound and go so profound.
Whenever I think of my country and its various places.

Stretching from Kashmir to Kanyakumari and from Dwarka to Dimapur.
The only road that connects me to all these places is My KV…
I found a mini India in my every classroom.
An impression of 'Ek Bharat, Shrestha Bharat' in a zoom.

Prayer in morning assembly and its unique way.
The house activities and cultural carnival each day.
Diversity of programs it holds in its full beauty.
Rarely be seen in any other institution of creativity.

'Tat tvam pushan apavrinu' is the mantra in every KVIAN'S heart…
Every KV of country tries to fulfil this with all its effort.
When I stroll down the memory lane…
The only thing that delights me is KV.
As I have passed my childhood and my youth in its lap.

It has touched my every sense...
And it's embedded deep in me with its charismatic fragrance.
My KV - My Pride is the feeling in my heart
And it keeps me moving with a great thrust.

Amit kumar pandey
TGT (Maths)
KV Aliganj, Lucknow

56

A Dynamic Journey in KVS

Oh! What an incredible ride so far,
Have seen no institution coming, Closer to KV at par.
Started from K V Chhindwara,
Welcomed by Mr Sharma at the dwara.

Unaware of CCE, RTE & Admission Categories;
The journey started adding professional glories.

Miniature India hub of innovations,
Talented teachers, inspiring mentors,
Encouraging Officers & high aspirations.

On & on adding the stars…
Be it academics, sports, ICT or teaching standards;
KV does surpass all.

Then came stop of K V Vidisha,
Added other dimensions of Think Quest, CMP, CCA & PISA.
As dynamic as the name,
Let's raise its glory and fame.

Now the milestone of KV-1 Shahibaug,
New Motto to 'Come to learn & go to serve the Nation',
It's a temple for teachers with passion;
National integration theme EBSB is now in fashion.

Pioneer in implementation of NEP-2020
NIPUN Bharat & FLN, skill India in vicinity;
Fulfilling the dream of Literate India is KV's mission.

Matching the changing trend,
Fulfilling the expectations with amends;
Glorious past of Alumni; Conquering the new heights
While nurturing the quest of curiosity; Making future bright
KV will always stride;
My KV... My Pride!

Rashmi Jain Bayati
Headmistress
K V No.1 Shahibaug,
Ahmedabad

57

KVS and I: Six Decades of Educational Evolution

Born in 1963, KVS and I,
I turned sixty with the blink of an eye.
One reaching heights, the other at its end,
Looking back when I cast an eye on the history of KVS,
I tried to draw a thread of connectivity.

Never did I foresee these myriad changes,
In appearance and mindset, life rearranges.
KVS was named Central School in the beginning.
When 20 army schools were transformed,
For the wards of uniformed people,
Across the length and breadth of the country.

Raised in a soldier's family and brought up,
With the defence atmosphere everywhere,
I took admission to KV Ahmednagar in 1968.
It laid down an unsaid and unspoken ordinance.
Following the rules and regulations,
At school and at home.

I never came across a disparity of thoughts,
Among the teachers and parents.
Of students and wards ,
Of not being disciplined;
Which became part and parcel of our lives.
The KVS and I.

There was a sudden makeover of the KVS, and I,
A new era emerged after 24 years.
I joined as a teacher in 1987 at KV Lakhisarai,
To meet my old pal KV enthusiastically.
Students started coming from the civil sector.
Inclusion became a necessity.

In between, CCE was introduced in 2009.
Blue and white uniforms gave way to checkered ones.
Students embraced academics with newfound zeal,
Their respect for learning, you could truly feel.
A wave of enthusiasm filled the air.
Eager to explore, to learn, to embody.

KVS and I touched new heights.
With the new glory,
Parents queued to get their wards admitted.
Due to its rising popularity,
And I upgraded to the new cadre.
With all its enormity.

When KVS and I turn sixty,
Post-retirement, my life would be different.
Taking me from my daily routine to a self-designed sortie.
KVS will enter a new phase of life.
With the implementation of NEP 2020, the new education policy,
And the sudden shift in teaching pedagogy.

KVS and I: Both of us would experience,
A new journey to traverse in the days to come.
And enjoy the new-found odyssey.

Madhu Bala Singh
Principal
KV AFS Arjangarh

58

More than Just a Profession

In the corridors of learning, where dreams take flight,
I stand before young receptive minds, guiding with all my might.
In my Kendriya Vidyalaya, my pride swells like an overflowing brook,
I nurture young minds, helping them to learn more than the book.

With a heart full of passion and mind bursting with ideas and knowledge to share,
I embark on this journey, teaching the students with love and care.
In each child, I see a spark I could ignite.
In my Kendriya Vidyalaya, my pride shines bright.

With books as our allies and wisdom to impart,
We delve into subjects, igniting a love for the art.
Together We – students and teachers explore, learn and stride,
In my Kendriya Vidyalaya, my pride stands wide.

Through trials and triumphs, we face them together,
I cherish these moments that will be treasured forever.
In each child's success, my joy is allied,
In my Kendriya Vidyalaya, pride amplified.

As I mould young minds and watch them excel,
I see the impact of knowledge that I can tell.
In their future, a beacon they'll provide,
In my Kendriya Vidyalaya, my pride personified.

So, as I pour my heart and soul,
Into the profession which has become so much more,
With gratitude and love, side by side,
In my Kendriya Vidyalaya, my everlasting pride.

Sudip Mazumdar
TGT (Biology)
KV No.3 Agra

59

Here's to KVS, Our Alma Mater

In the heart of learning, we find our way,
KVS is our beacon, where knowledge holds sway.
A place of discovery, where dreams take flight,
In the halls of education, we find our light.

From North to South, East to West it spans,
A tapestry of cultures, a melting pot of plans.
Kendriya Vidyalaya, our dear KVS,
A place of growth where we truly progress.

Teachers who guide with wisdom and care,
Nurturing minds and teaching us to dare
In every classroom, there is a world to explore.
Every lesson is a chance to soar.

Friendships we forge, lasting and true,
In the colors of unity, red and blue.
With books in hand and dreams in our eyes,
In KVS, our aspirations reach the skies.

From sports to the arts, in every field,
KVS values; it's the knowledge it yields.
In this institution, our hearts find their song,
A place where we all truly belong.

So here's to KVS, our alma mater, so grand,
Where we learn, where we grow, where we stand.
In this journey of life, it's our guiding star,
KVS, you've shaped us; you've taken us far.

Mamta Shekhar
Principal
KV No.2 Faridabad

60

KVS: As Tagore would see it

We have all read Tagore once I have it oft Idolized
Basking in the Glory of KVS Thus, have I proudly realized...

Where Nobel Thoughts are without constraints
Veritably the Academic standards High!
Where knowledge is Multidimensional
Feet deeply rooted culturally
And vision that reaches zenith of the Sky!

Where the Pupils are Rubies, Diamonds & Emeralds of ONE Necklace,
Unity in Diversity and All for one and One for All: Literally “Mini India”
Where the mindsets are Broad & Encompassing; Not narrow, or caged.
Where Patriotism, awakened Citizenship and loyalty the inherent insignia!

Where Innovation and Leadership are not mere words,
Where Sports and Extra- mural activities expand the stretches of Imagination and Creativity. Where the constantly upgraded & updated learning reigns.
Ensuring no dearth of Ideas, nor stagnation, nor misdirected Negativity!

Where the Minds are led to the “Ram Rajya” of Multifaceted approach to life,
While Personas: Dynamic& Effervescent; Global Outlooks sans the meaningless strife.
Dear Friends, Indians And Countrymen, In that Haven of Enriched lives,
The prestigious KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN elegantly Thrives!!!

Pushpa Sharma
Principal
KV Dharamshala Cantt

61

Ode To My KV

I sing in thy praise this humble ode,
O my workplace, where lives unfold!
Within your walls are characters made,
Each one distinct and cautiously laid.

In ’63 the seed was sown,
A vision was created, a clarion blown.
Guided by values and a shared dedication,
With collaboration and dexterity you strengthened your foundation.

15th December marks the beginning of your tale,
The vessel embarked with purpose was set on sail.

In you the symphony of creative minds resound,
Ideas form shape, dreams go leaps and bound.
In your realms young minds are free to soar,
Life’s secrets are unveiled and unfamiliar explored.

You nurture passion and set dreams ablaze,
Make talents flourish, efforts praised always.
In your embrace unfettered thoughts strike a chord so clear,
You are a spirited poesy to minds without fear.

In your precinct darkness dispels and hope blooms,
As the blackness of night opens up to morning’s bright plumes.
Thou art a citadel of innovations where hope resides!
Where promises enkindle and friends confide.

In your alleys a new dawn awakens, casting all prejudices away,
New assurances tend to see bright promising hues of the day.
Amid your walls vibrant life persists,
Within you entities find their true bliss.

We cherish your presence and hail and cheer,
With gratefulness and honour we hold you dear.
You are turning sixty; we will celebrate a milestone grand,
And wish you to burgeon, persist and maintain your brand.

Aparna Pandey
TGT (English)
KV Kanpur Cantt

62

Nature

There's something about nature, she slowly grows on you,
And when in perfect communion, doth casts a spell anew.

She holds you in her sway of delight that makes you feel so free,
To hear the wisps of rustling leaves bristling through the tree.

The sombre past, the future silhouettes for once, all cease to matter,
As clouds float by on dreamy skies to usher in the showery pattern.

The breezy balm that she 'plies to soothe your tortured soul,
Will make you wonder about the worth of your cosmic role.

It's nature; she'll make you feel you're but a speck of dust,
The mighty pride, the swell, the glide we're bound to crash and rust.

You will also most certainly realise you are uniquely special,
For how lucky you are to breathe the air that knows no creed, no racial.

A gush of sweet epiphanies will rush down through your vein,
Nature: She'll cleanse you pure and truly make humane.

Jhanjha Chakravarty
PGT (English)
KV No.3 Delhi Cantt

63

My Faces in KVS

They said, “Introduce yourself.”
It set me thinking, which facet of mine?
I am confused, not for an identity crisis,
But for multiple identities.

Many roles I play and many facets I have,
The more I dig within, the more I crave.
A learner, a follower, a leader, a teacher,
A motivator, a guide, and a mentor.

As you behold, so you find.
Which face of mine shall I unwind?
I succeed on some fronts, fail on a few,
Then rise again to do the due.

For more than two decades, I have tread
In the lands and the hearts that many have dread.
Over the mountains, in the deserts, on the sand dunes,
Where gigantic waves play life’s richest tunes.

Stealing some laughter in the struggle to survive,
Much more to learn, harder yet to strive.
Meeting expectations and fulfilling demands,
Yet, a bit for myself, I do command.

Many lives I live in a solitary day,
You can identify me by the roles I play.
All roles are integrated, making me complete,
And thus, I live each morrow to greet.

Ratna Pathak
PGT English
KV Sector-5, Dwarka

64

The Sprouting KVS

On December 15 1963, a legacy was born,
Blooming roses without any thorn.
Sprouting out of its nurturing roots,
New saplings rising from its shoot.

From the ground rise the green twigs,
Feeding on its musical gigs.
Hidden for years inside the earth crust,
Spreading its branches nationally and internationally.

Unfurled its branches near and far,
Established its institutions across the globe.
Children from all the strata of society,
Come to study near and far.

Ubiquitous text books and omnipresent curriculum,
Accompanied with common medium and common syllabus.
The feeling of oneness across social stratum,
Succeeding the hierarchy from local to global.

Blooming flowers with ripen fruits,
Spreading its fruits with a motto.
To develop the spirit of national integration,
Prepare world class citizen with holistic approach.

KVS teaches us culture of oneness building up culture with varied enterprise,
Not only an institution but an emotion with a bundle of surprise.

Tanu Khurana Tshering
TGT (English)
KV Moscow

65

A 'Shining Star'- We Bow to Thee

A haven of learning, with joy unleashed,
My temple of learning, where I proudly teach.
With a passion bulging at the seams, and a spirit full of gleam
It's more than a school, its eternal pride I deem.

Little minds I ignite, like twinkling stars at night,
A symphony of learning, blinking with delight.

In every transaction's embrace,
inquisitive curiosity I face.
Fostering minds young,
with values & deeds unsung.

A kaleiodoscope of colours on display,
In the portals of Kendriya Vidyalaya on array.
A tapestry woven, with threads so diverse,
Celebrating the beauty of each student's verse.

Pupils from every region at their best,
From North to South, East to West.
With languages that sing and cultures that dance,
A home for every heart at a glance.

Technology & digital tools we nurture magnanimously,
Progress and innovation we implement in the same spree.
Educate, Encourage and Enlighten through NEP,
In Kendriya Vidyalaya, we salute thee.

A Rising sun An Open Book, Buoyant Birds and Tricolour Unfurled,
The logo which KVS so proudly upholds.
A legacy of excellence, we valiantly proclaim,
In the logos espouse, we forge ahead the flame.

Among KVians the camaraderie is so strong,
To KVS we truly belong.
A galaxy of educators, passionate & true,
Together we work for dreams to come through.

Thank you dear KVS for shaping my “Teacher’s heart”,
It is in your halls that I found my calling’s start.
KVS forever you will be,
A “SHINING STAR”, we bow to Thee!

Rachel Rajeeva K
PGT (English)
KV NAD Aluva

66

The Edifice of Fame

Miracles happen, which are thrilling to perceive,
And my birth as KVS is one such dream conceived.
I fulfill adoringly every child's ambition,
And cater dotingly to all their emotion.

In my hallowed portals, learning becomes an incessant joy,
And fear is far removed from every girl and boy.
The child's deepest needs in me are unceasingly met,
And abilities in games, music and dance are made perfect.

Teachers are guides who ensure talents are harvested,
And here strong friendships for mental health are manifested.
This I proudly ensure and that no stone is left unturned,
In sowing seeds, rich dividends returned.

Through me, Mother India's dreams are fulfilled,
Of thriving, excelling in thought, word and deed.
My pupils are inspired to innovate confidently,
And turn the NEP vision of Make-in-India a reality.

And dreams unending of Chandrayan, and Mission Mars,
My pride is in laying the foundation for reaching stars.
And fan winds of excellence to make sure my pupils are at the helm in many a nation...

I am the proud Alma mater, the edifice of fame,
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN, its glory, my name.
Birthing Miracles in many lives you see.

K.S. Soujanya Singh
PGT (English)
KV No.2 Nausenabaugh, Visakhapatnam

67

My KV-My Pride

Where education is served with immense tender love and care;
Where educational goals are kept high for all with equal share;
Where everyone strives to achieve ever the state-excellence;
Where educational ambience is filled with vibrant radiance;
Being a part of it, my mind rings with this:
My KV-My Pride.

Where students display the Indian culture' gist-Unity in diversity;
Where they excel in throbbing sports and games with responsibility:
Where they hone their skills in the sphere of science and technology;
Where they envision soaring high the academic epistemology:
Being a teacher of them, my heart rejoices with this:
My KV- My Pride.

Where teachers of different regions are seen united;
Where their classes with advance technology are sighted;
Where they feel they are abounding with light for the night;
Where they aim their goals wide, keeping their challenges aside;
Being a member of them, my soul fills with this:
My KV-My Pride.

Prajapati Kailash Ramhit
PGT (English)
KV Dhar

68

A Sanctuary of Knowledge

In the realm of education, a shining star,
KV stands proud, no matter how far.
With dedication to students and to teach,
It's a haven of wisdom, within everyone's reach.

Teachers with passion, hearts full of care,
Nurturing minds, igniting a flare.
In every classroom, knowledge takes flight,
Guiding young minds, towards futures so bright.

For students, a canvas, a place to unfold,
Dreams and ambitions, courage untold.
With holistic devotion, they're shaped and grown,
In KV's embrace, seeds of potential are sown.

A fortress of learning, values it imparts,
Where minds are enriched, and dreams find their starts.
KV stands tall, an institution so true,
Dedicated to students, teachers, me, and you.

So let's raise a cheer for KV's grace,
A sanctuary of knowledge, a special place.
With dedication shining, like the sun's golden gleams,
In KV's realm, we discover our dreams.

Abhishek Raj
TGT (English)
KV No. 4 Delhi Cantt.

69

Shaping Futures: A Journey

In KV's realm, as torchbearer, I've shone,
Guiding students since '94, seeds I've sown.
Learning's corridors, hearts beat with might,
Illuminating minds, fostering dreams to take flight.

With grace at inception, in the classroom's sphere,
Eyes aglow with wonder, minds sharp and clear.
Educators true, dreams we ignite,
Nurturing ambitions, like stars in the night.

Resonance, laughter, intellect's embrace,
In learning's symphony, every soul finds its place.
The playground's vigour, goals aligned,
In KV's heart, aspirations combined.

Through exams, projects, their quests I've steered,
Nurturing young minds, their potential revered.
Years flowed by, graduation's proud call,
KV's legacy, a beacon for all.

As paths diverge, students explore,
Seeking knowledge, yearning for more.
Connections forged, memories sown,
KV's legacy, brightly known.

In reflections, I stand as their guide,
A torch of light, forever by their side.
From '94 till now, this journey's grace,
In poetic verses, our story takes its place.

K. Shesh Kumar
PGT (History)
KV Singrauli

70

KV School Unparalleled

KV, that is Kendriya Vidyalaya,
A school unparalleled,
Amalgamation of the nation in miniature.

To learn and practice lessons,
Accumulated not from books alone,
But exposure to the country in length and breadth.

To innovate and experiment,
To travel and experience,
To observe, assert, and correct.

Home states differ, dialects differ,
Though Bharat Mata's proud children all,
Into building a prosperous future of motherland.

Sparks of the young tapped by skilled mentors,
Science or art, song or dance,
Their voice resonates in this soil.

To come out with the best,
Not just the scores, talents latent,
By peer pressure or resilience sprouts out well.

My KV is my pride, my country is my identity,
Opened a wide world for me too,
As a late entrant - to see, learn and teach too!

Sindhu KM
PGT (English)
KV Ramavarmapuram

71
The Three Jubilees

Silver, Gold and Diamond Jubilees - are Significant milestones in any journey!
Strangely blessed to be a part,
Surely privileged to be present.

What were these experiences like?
What did I get?
What did I learn?
What could I give?

Questions, Questions and Questions!!!
In the exploration of its answers
Along with the struggles and successes
Lies the purpose of the pursuit. Isn't it?

In the Silver Jubilee celebrations of KVS
Ma'am Chari*, spoke of the need for Institutes of Human Excellence!
Was it a thought arising out of a comparison with IIT?
Or, could this have germinated from something else?

Two decades later in a passionate private interaction
Ma'am narrated the beginning of her story in KVS.
Her transition from teacher educator to educational administrator
Was spurred by an objective of KVS – Striving to develop
Indianness in the students!

Living to achieve the multifold objectives
KVS has been supporting the sustained efforts of the students in its fold
While also polishing the naturally talented diamonds
And going that extra mile by hand-holding the needy ones.

To be the Vishwa Guru is not just a vision
But a distinct and certain possibility
Role of teachers is pivotal in this pursuit - and
Creation of conducive environment is the critical requirement!

So, to sustain this journey of many more Jubilees
Let this national vision become KVS vision too!
Let our mission be to translate this vision into reality!

The successes so far, be the melodies heard thus – and
The successes to come ahead, be the melodies yet to be heard!!!

N R Murali
Joint Commissioner (Acad)

*(*Ma'am Chari was a former Commissioner of KVS)*

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Kendriya Vidyalaya Sangathan

18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110016

18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016

https://kvsangathan.nic.in/ | @KVSHQ | @KVS_HQ | @kvshqr | KVS HQ

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर